जो कुछ लिखा लिलाट महँ प्रकट भयो सो अंक।
अब मोहिं सखी सँभारियो चढ़े न कोइ कलंक॥

सुन यह बात सखी सब कांपी। लीन लुकाय हिये महँ चांपी॥
देखैं रूप सो वह वर नाहीं। सत कोउ अहै मंदिर के माहीं॥
तब गहिबांह सो दीन्ह निकारी। लखा न प्रीति कीन्ह पुनिरारी॥
लेके कँवल गई घर माहीं। रतापाट बिछावन ताहीं॥
तहां कँवल लेके बैठारी। आरति करन लगीं सब नारी॥
आई तब मुकताहर माई। लीन्ह बालका कंठ लगाई॥
सुन जोगन कीनी वै नारी। पिउ आपनका दीन निकारी॥

सुनत वचन माता तुरत गइ तन सूख भुराय।
हिये कांप मींजे करन कहां नदे विष खाय॥

पुनि रिसके समझावन लागी। कातोहिं औगुनकीन्हअभागी॥
कसकीने पिय तैं बरिआई। तोयँबारी कछु लाज न आई॥
तोइ अबला औ दुलहन बारी। कसतोयँ पियकादीन निकारी॥
बारी ऐस करे नहिं कोई। जसतोहि कीनलाज सबखोई॥
अब रिस मान गयो जो पीऊ। बिना दूध मिले कहँ घीऊ॥
आज रहो नैहरके माहां। काल्ह जो लेजाई गहि बाहां॥
दुलहिन बार सो मुखना खोले। धरे लाज मुख बोलन बोले॥

तोय सब लाज गवांय कुल कीन्ह कलंक लगाय।
अबको जन्म निबाहिये गये कंथ रिसखाय॥

कंथक नाउँ सुनत धन रोई। अबिको ज्ञान लाज सब खोई॥
सुलग रही जो हिरदे बारी। दग्धउठी नहिं जाय सम्हारी॥
कंथ बिछोह ओछा मांसू। हियरा फाट खसा आंसू॥
दीनेसि फेंक भार सम जोड़ा। मोतिन हार फेंक चहुँओरा॥

तोरसि सब अभरण भर हारू। पड़े भार महँ अस सिंगारू॥
सुमिरि सो रूप कंथ कर नेहा। पड़ी पछार छार भइ देहा॥
सखी सो सब रोवें हिय लाई। क्यों समझे काहू समझाई॥
देख अँगूठी कनक कर लिखा कंथ कर नांउ।
त्यों २ सुमिरि बिछोहते गिरे मूर्छि वहि ठांउ॥
सुमिरि बिछोह गिरी भुइँ नारी। मनहुं मीन जलते गहिडारी॥
भइ बिन प्रान हरी जब आसा। जानु फूल ते हरिगई बासा॥
कठिन बिछोह पीर तन पीऊ। जान ज्ञान ते बिछुरा जीऊ॥
तेहि बिछोह लागा घन कारी। रोवें सखी संभारनहारी॥
भूल गयो सब मंगलचारा। होयगा मँदिरमांझ अँधियारा॥
सहे सो लेहि खड्ग औ बाना। सहिनसके पिउ बिछुरनप्राना॥
कोइ रोवे कोइ मींजे हाथा। कोइ पटके कोइ थांबेमाथा॥
कोइ डुलावें वायुकर कोइ छिड़के तन नीर।
आवै लहर डसे सर्प यह विधि कँपे शरीर॥
एके घड़ी कष्ट भा भारी। रोवें निकट सखी सब सारी॥
पुनि धन लीन्ह ऊरके सांसा। तब जिउपरी जियनकीआसा॥
पोंछन लगीं सखी सब आंसू। कीनो केस कमल तन नासू॥
तुम सब जिउ औ प्रान अधारा। तुमबिनहोय जगतअँधियारा॥
सुख आनंद कहँ कीन निआहू। तुमका कस उपजा दुख दाहू॥
कहो कमल आपन दुख दाहू। तुम संग नाथ कहां हम काहू॥
करो जो शोच गौन ससुरारी। तेहिका करे जन्म भा बारी॥
तबलो बारी पिता कर जबलो होइ न ब्याह।
पुनिघर सबससुरार कह सबकरहोय निबाह॥
सुनो सखी मैं प्रान नसाऊं। जिय तजिदेउं दाहकहँ पाऊं॥

तुम मोहिं ब्याह आगमहँ डारी। ऊपर दियो इमम मोहिंगारी॥
कहूं बात तो निलज कहाऊं। मौन होहुं तो धर्म गवाऊं॥
देखो दुलह रैनि सब सोई। भोर होत ना परखो सोई॥
कहँ मम कंथ जगत उजियारा। जोमोहिंनिलज जगतकेढारा॥
पिउ मोर भान मैं ताकर ब्याही। रहो न सेज निराखो नाही॥
दैगा आपन कनक अंगूठी। अहै सखी देखो मोहिं मूंठी॥
सो मोहिंब्याह बिछोहिगा प्रान पीउ जगभान।
अब तुम मोहिं जो देउ विष कमन देउँ मैं प्रान॥
सुन सोबात देख कर चीन्हा। भइपरतीति सबन निज कीन्हा॥
सत वह नाह अहै कोउ दूजा। कहे काह कछु ज्ञान न बूझा॥
शब्द कहा निज अचरज मानो। यह कर्ता के गुन पहिचानो॥
जिन पलमहँ सब जगत सँवारा। तेहि का येहि करत कत बारा॥
दिया दीप रानी रुप कला। कहँ सरनदीप कहां नृपमिला॥
कहँ वह राम कहां वह परी। कहां सुजाय कहां उड़ परी॥
जिहिके निमित लिखा जसहोई। तेहि पन मेटसके कत कोई॥
कहां सुआती सीप कहँ कंचन कहां सोहाग।
मिले आन तेहि का सोई अंतलिखा जेहिभाग॥
तप माते पुनि हिये बिचारी। हिये लाय समुझावे बारी॥
सत वह दूलह अहै जो नाहीं। कसतुम देव बार गहि बाहीं॥
मारब साध भूंठ जेहि नाईं। सोई होय जो करे गोसाईं॥
जो वै चहा कीन भा सोई। अब तेहि मेट सके कत कोई॥
अब बरबल जेही चल आई। तबहीं मौन बाख फिर पाई॥
नहिं तो कुँवरि रही भरमाहीं। जानो ब्याह कीन हम काहीं॥
तीन लोक लाभे युग चारी। तऊ न हिये ते करवे न्यारी॥

जो बर आवा बार निशि गयो ब्याह पुनि सोय।
तेहि बिन गौनको पाइये कोटि जन्म जो होय॥

निकसा दुलह होत भिनसारा। हिये सोच जानो ठग मारा॥
जेहि देखाय भई वह जोती। लेगइ प्रान काढ़ जनु मोती॥
यही जो सोच भयो असवारा। दोउदिशि पुरखन की जोहारा॥
चला जो सोच क्रोध मनकीने। अधिकमलीन भयो दुखदीने॥
देखि रूप सब कहैं बराती। का भयो रंग हियो जो राती॥
नगरक लोग लाग सब कहै। जो निशि हत्यो कहां सो अहै॥
की यह होय कि दूसर कोई। की हम भूल कि रंगया धोई॥

की चेटक हम देख सब की काहू छल कीन्ह।
अहै खेल अचरज कठिन पड़े न काहू चीन्ह॥

यही सो सोच करै सब कोई। पै मुख बात न बोले कोई॥
जो हिय सोच देख वह नारी। होयमनक्रोध जो दाननिकारी॥
दूने क्रोध भरा हिय माहां। गयो जो सभा पिताके पाहां॥
जाय निकट तेहि कीन्ह जोहारा। बैठ तहां कर टेक कटारा॥
ततखन आंसु नैन भरिआये। देखन लोग सभी उठिआये॥
लागो चहे घाउ तन कीना। पुरख न धाय तबै तहँ लीना॥
पूंछा किन अस कीन दुराई। काभा दुःख सुने जो पाई॥

हम सेवक सर दीन्ह कह तुम ठाकुर सुल्तान।
दुःख सुने पावैं तुरत छिन महँ दे यह प्रान॥

बोला रोय कहूं का दोखू। जिव दीन्हे पुन होय न मोखू॥
तुम मोहिं ब्याह दीन तनआगी। अबजिउजाय कि होउँबिरागी॥
जो चाहो घट राखो माना। चलो आज हठ लेउ बिताना॥
रहता नाहिं नेक यहि ठाऊं। होइसर बसे यहि गाऊं॥

त्रिया मंदिर मांझ विष खाहीं । जाने प्रीति रीति कछुनाहीं ॥
जारों बात कहैं यक बोरी । कहां प्रीति कहां रीति कठोरी ॥
हमबैरी अस मंदिर के माहां । जहां न प्रीति रीति का ताहां ॥

यहीसत्य मैं कीन्ह मन पियो न चीनहिं पान ।
यही तो गौन चलावई की करियो जिउ हान ॥

सुन सुलतान जो सत की बाता । सुनते क्रोध भयोमन ताता ॥
सतकाहू जो अमृत कीना । अमृत मांझ घोर बिषदीना ॥
जो छल भयो प्रीतिके माहां । अमृत पान न पीजे ताहां ॥
मंत्री आपन बेग बुलाई । आलमशाह के तीरं पठाई ॥
औ कह दीन कि कोट उपाई । छिनभर बिलम न मानोभाई ॥
तब मंत्री आये दरबारा । आलमशाहक कीन्हजोहारा ॥
औ अरदास कीन यश छाजा । ऐ सुल्तान चीनपति राजा ॥

हम कलें तुमते भये चढ़े कोरी औ राज ।
अब ठाकुर किरपा करो गौन चलावो आज ॥

आलमशाह सुनत हिये लाजा । कहाकि दुःखपड़ा केहिकाजा ॥
मेरा दुःख दुःख जिन मानो । पत पानी आपनकै जानो ॥
सेवा योग न गात हमारी । किरपा करो रहो दिन चारी ॥
तब मंत्रिन पुनि शीश नवावा । तुमजगभान दुःख किनलावा ॥
जग निर्मल सो तुम्हरे छाया । पति पावतभयो तुम्हरी दाया ॥
पै अब दुख मंदिर ते आवा । वेकछु मंदिर मांझ दुख पावा ॥
तैं दुखमहँ जो जिउपर ठानी । केहिबिधि रहैं होइ कलहानी ॥

तेहिते गौन चलाइये रस राखे सुलतान ।
केहिगुन बिलम लगाइये जोपैगौन निदान ॥

तब सुलतान टेक बैठावा । आपसो उठा मंदिरमहँ आवा ॥

आवा धन अपनी के पाहां। पूंछा अंत कीन तुम काहां॥
कस दूलहका दीन निकारी। का बिधि कीन भई जो रारी॥
अब तुम करो गौनकर साजू। वे रिस भरे रहें नहिं आजू॥
तब धन पिउते बरन सुनावा। तुम सुलतान मर्म नहिं पावा॥
वह वर नाह दीन जेहि बारी। केहिसंग दीनजोगौननिकारी॥
पूंछो जाय कीन जिन ब्याहू। आवैं नगर लोग सब काहू॥

दीन ब्याह बारी जबै हतो सो निरमल रंग।
सो अब दृष्टि न आवहीं गौन देहिंकेहि संग॥

तब सुलतान जो कीन बिचारा। आय निकस पुनि बैठाबारा॥
काजी और बजीर बुलाई। वर देखे का फेर पठाई॥
देखो वर दूजा को आहै। नगरक लोग कहाधौं काहै॥
तब काजी दूलह पहँ आवा। बैठजो पास दुलह निरखावा॥
वहकी किरत न एको पावा। तौलौं उतर दीन चलिआवा॥
ऐ सुलतान सत्य वह नाहीं। कहँदिनधूप कहांनिशिछाहीं॥
हम जो लक्षण रैन वह देखा। सोयह नाहिं जो पुरुष बिशेखा॥

ना वह रंग न रूप वह ना वह नैन न बैन।
सब पृथ्वी भाषै यही फेर भयो कुछ दैन॥

जो सुल्तान सत्यकी सुना। भा मन सोच बूझ सरधुना॥
की छल भयो किभा कुछ फेरा। जानन जाय खेल बिधिकेरा॥
अब हम केहिका गौन चलाई। जो परतीत धोख की पाई॥
भा मन क्रोध कही सब बाता। मांगो गौन सो कौने नाता॥
जो वर रैन बिवाहा आई। तेहिबिनगौन दीननहिं जाई॥
सो उठजाउ बिलम जिन लावो। वहबिन गौन चाल कबपावो॥
जस तुम कीन कीननहिं काहू। सुन लाऊं का कीन विवाहू॥

जाउ बेग पंथ लागो गौन नाम जिन लेउ।
हमतन जरत लजातहै भूंख अंग जिम देउ॥

मंत्रिन जबहिं उतर यह पावा। उलट शाह मोला पहँ आवा॥
कहा कि का बैठो सुल्ताना। कीनो कहा भयो कछु आना॥
ऊंचे ब्याह कियो तुम आई। सुन पाई यह ऊंच बुराई॥
बोले लोग सबै मुख बाता। औ सुल्तान आपभा ताता॥
उठी तन आग गौन के नाऊं। जाना जीउ जाय यह ठाऊं॥
वैसो वर दूजा बतलावैं। छलके तुमते रारि बढ़ावैं॥
बैर ब्याह बारवै दीन्हा। कबकर दाउँ ताक वै लीन्हा॥

जस छल दुरजन धर किया तैसभये सुल्तान।
गौनचार का पूंछियो जान चहत है प्रान॥

मोला शाह सुनत भा ताता। भलतो ज्ञान जो कीनबिधाता॥
कही जो दूजे वरकी बाता। मसि लागे पुनि केहिके गाता॥
वह बारी हम चाहैं बारा। केहि की अपत होय संसारा॥
हमहूं दूध पान सो नाहीं। जो कोउ अंचै जाय पलमाहीं॥
साजो बेग पुरुष सब कोई। देखैं आज युद्ध कस होई॥
कीतो आज गौन हठ लीजे। कीतो प्रान पौंर पर दीजे॥
पति पावब सो गौन के लीने। पावब कहां प्रान पुनि दीने॥

साजो बेग अमीर सब चलो शाह के बार।
करो आज रन भारते पूजा दिवस तुम्हार॥

आज्ञा भई कटक सब साजा। धौंसा दुंद मारका बाजा॥
सजे कोप सब बीर बराती। भये असवार सो भांती भांती॥
जहँलग मीरराय औ राजा। निहचोमरन जो जेहिरनसाजा॥
साजे बीर औ मीर नवेले। कर चौगान चहैं रन खेले॥

चढ़े कोप औ बाजा डंका । सन्मुख भये न माना शंका ॥
भोलाशाह भयो असवारा । ले सब कटक चला दरबारा ॥
बाजे दुंद औ खुले निशाना । बोले भाट युद्ध रनमाना ॥

पड़ी सुहोल नगर महँ चहुंदिशदुंद पुकार ।
साज बराते दुंदपर आवत होत हँकार ॥

भई पुकार सुना सुल्ताना । कोप उठा तबहीं जग भाना ॥
अब हमका यह कटक दिखाओ । देखें गौन कोप कम पाओ ॥
साजो सैन होउ असवारा । रोको पैठ न आवैं बारा ॥
आज्ञा भई सबै दल साजा । दुंद दुंद भये तुर मुंह बाजा ॥
जो जस हतो सो तस उठि धावा । धरती मेरु कटक सब छावा ॥
साजे दल मतंग कजरारे । उमड़े मनो घटा अँधियारे ॥
कोटिन पुरुष चढ़े चहुंओरा । आवै दल बादल घन घोरा ॥

सामबीर दोऊ दलन चढ़े बरन वर पार ।
भये दोउ दलसहूं मुख धौं केहि रखे कर्तार ॥

जेहि सो मिलि आये वर दंडा । कांपा भुम्म स्वर्ग नौखंडा ॥
भोलाशाह मरन जिव ठाना । चढ़ा बजाय भरम नहिं माना ॥
आलमशाह चढ़ा दल भारी । छायगई चहुंदिश गजकारी ॥
सन्मुख आय दोऊ दल गाजे । बाजे बहुत बीर रन बाजे ॥
बोला भाट बीर रन बाना । चढ़ी कमान सबै भये ताना ॥
कोउ न भर्म कोउ शंका माने । तुर्त सभी उठके समुहाने ॥
चाहे सहूं होय गज पेला । निकरे लाग खड्ग औ सेला ॥

दोनों बाजेबजुरअस कौनसके कर बीच ।
गयोसो खेलभुलाइ बहुभयो खेल बसमीच ॥

यहि बिधिठठे हटे नहिं कोई । भारी भये भुम्मिदिश दोई ॥

देखें अबला चढ़ी अटारी। अरुझे चहत युद्ध यह भारी॥
चमके खड्ग आंच अस आवै। जानो स्वर्ग लोक बरसावै॥
सो रन देख कांप मन माहां। गई सो धाय जवाहिर पाहां॥
ऐ रानी धन तोर विवाहू। नहिं अस सुना न देखा काहू॥
होय निछावर चहत बराता। सेंदुर तोर होय जग राता॥
दोउ दिश मीर राय औ राजा। कलपै चहत माथ तो काजा॥

कटक जुझावसि कौन गुण हत्या जनहिं चढ़ाउ।
न्याउ चुकै तोरे मुखै बेग सो न्याउ चुकाउ॥

सुनो सखी मैं करौं निआऊ। जो कोउ सुने करे सतभाऊ॥
होत बसीठ आज मोर कोई। कहितूं बात कहत तेहि सोई॥
सत पूंछै बोलै सत भाऊ। जो जेहि होय जो करै नियाऊ॥
जो यह बात सखिन सुन पावा। धाय बारतैं पैक बुलावा॥
धाय बेग सो रनमहँ आवा। औ सुल्तान ते जाय सुनावा॥
आलमशाह बूझ मनमाहां। मन्त्रिन मीर पठायो ताहां॥
आयो मीर लौट दरबारा। भीतर मन्दिर कीन्ह पैठारा॥

बैठजाय पट ओट तहँ पूंछ कमलते बात।
कहो न्याउ क्या कीजिये जेहि गुण फिरे बरात॥

सुनो मीर आयो मम बारा। पै मोहिं दई निलज कै डारा॥
जो सन्मुखते बोलों बाता। कामैं करूं जो कीन्ह बिधाता॥
कहो जाय जेहि कारन जूझैं। करें न्याउ आप मन बूझैं॥
जो वह रहा रैन मम पासा। देय बताय जो कीन्ह हुलासा॥
जो मैं भोग तैं हाथ खवावा। देय बताय कहां मैं खावा॥
औ मोरी फिर देय जो चीन्हा। आपन लेय मोहिं जो दीन्हा॥
सेवा बास किहूं जेहि भांती। दिये बताय जो देखा राती॥

तब सत जानो अहेवर जिन्हें फेर मोहिं देइ।
तौ कस प्रान नशावै न्याउ जीत सो लेइ॥

जो यह बात मीर सुन पावा। आलमशाह ते जाय सुनावा॥
सुन सो कहा सत्य यह न्याऊ। कहो जाय जिन देवो पाऊ॥
आव अमीर खेत के माहां। भोलाशाह ठाढ़ पुनि ताहां॥
शीश नवाय जो बात सुनावा। तुम कस जुझ कारोपापावा॥
दूध नीर जो करो नियारा। कस यहकर नहिं करो बिचारा॥
पूंछौ वर औ सभी बराती। कहिने ब्याह भयो धौं राती॥
तनय तुम्हार नहिं आयो ब्याहा। झूठे जो जेहि मर्द सो काहा॥

बोला भोलाशाह तब हरिगा ज्ञान तुम्हार।
तुमतो जानो ब्याह नहिं जाने सब संसार॥

राखो रैन दुलह घरमाहां। अब सो कहो ब्याह भयो काहां॥
नाहिंन लाज न बूझ बड़ाई। तुम ते हारो जीत लजाई॥
तब तौ मीर कहा यह न्याऊ। पूंछो पून कहे सतभाऊ॥
जो वह रैन रहा कैलासा। देय बताय जो कीन्ह हुलासा॥
देय बताय भोग जो कीन्हा। देय फेर जो लीन्हीं चीन्हा॥
सेवा दास जो भई निश माहीं। देय बताय रार कछु नाहीं॥
यहि मा दोष न काहू दीजे। आपन न्याउ आपते कीजे॥

भोलाशाह सोचितब कहा कहे बरताय।
देखा सब साथिन बस पूंछा बार बोलाय॥

निकट बुलाय वंस तें पूंछा। कहो सत बातहोय किन जूझा॥
जो तुम कीन भोग निश माहीं। देउ बताय रार कछुनाहीं॥
चीन्ह लिहे होउ सो देऊ। आपन होय मांग सो लेऊ॥
सत्य बचन ते अमृत पाई। काहेक मरो जूझ बिषखाई॥

तब वह बार बोल सत बाता। कहो सत्य जो दई बिधाता॥
जबहीं अंध धुंव वह आई। तब कोइ महिका लीन्ह उठाई॥
मैं निशरहो मांझ बनमाहीं। मोहिंते ब्याह भयो सो नाहीं॥

रह्यों अकेला निशाबन भोग कहां ते कीन्ह।
कहा मैं भेद बतावऊं कहा देउँ मैं चीन्ह॥

कोउ अस दूत पवन सँग आवा। मोहिं उठाय तहां बैठावा॥
जबहीं लाग होन भिन्सारा। तब उठाय मोहिं तहँ बैठारा॥
आयो जब मैं मंदिर मँझारी। तबहीं जागपरी वह नारी॥
देखत मोहिं उठी सो रोई। धाईं सखी बैठ सब कोई॥
पूंछा वह यक बचन उघारी। को तुम अहो मांझ सो नारी॥
फिर सो मोर सुने नहिं बाता। गईसो निकसि सखिनकेसाथा॥
यही सोच मैं बाहर आवा। तुमकेहिका निशब्याहकरावा॥

मैं निश आयो बार नहिं तुम आन्यो वर कौन॥
ब्याह करायो कौन ते अंध हतो की मौन॥

जो दूलह बोला असबाता। बोल उठी चहुँ ओर बराता॥
सत वह रूप हतो उजियारा। रहे निकट नहिं कीन्हबिचारा॥
देखि रहे बावर मत खोई। काहु न खोज कीन्ह का होई॥
हतो दूत की इन्द्र दुलारा। जेहिकर ब्याह कीन्ह करतारा॥
तब दूजा लख कहा न कोई। अब सो सोच किये का होई॥
आपन हार दोष कह दीजै। हम बावर बावर केहि कीजै॥
जो कर्तार चहा सो कीना। जेहिकेनिमितलिखातेहिदीना॥

खेलनहारा खेलगा सो मैं मेटन कोइ।
तबहीं कीना बूझ नहिं अब रोये का होइ॥

भोला शाह सुनत भा बूझी। नहिं फिर जाय न आवे जूझी॥

देखा सब मंत्रिन के ओरा। जूझ करें की करें निहारा॥
न्याउ करै तो जूझ न छाजा। जूझ किये तौ होइ अकाजा॥
मंत्रिन कहा सुनौ पति राजा। मरे जिये अब होय न काजा॥
मानिक जो छल साजत कोई। देखत आज रहत कत सोई॥
यह कर्त्तार आप में कीना। जेहि का चहा ताहि लै दीना॥
करूं जूझ तौ बनत न जूझो। नहिं तौ फिरो आप मन बूझो॥

न्यावै हारे आपहिं जूझ प्राण कस देउ।
धरमजाय पुनिजाय जिउ नर्क पेल कसलेउ॥

तब सुलतान फिरा मन हारी। जुवा खेल जस हार जुवारी॥
फिरी बरात गई जनु लूटी। नैगा माथ गर्व गा टूटी॥
चला लौट दल धरती डोलै। फिर काहू कोइ बात न बोलै
गई सो मेट जूझकी घरी। पुनि यम कटक खेत ते टरी॥
गा सब मेट बरन औ साजा। मिटगा राग रंग औ बाजा॥
भोलाशाह जो कीन पयाना। आलम शाह सो चीन समाना॥
फिरी बरात जो मूर गँवाई। चीन सो सोच सोच गा छाई॥

मूर गवांय चले सब कर मींजत सब लोग।
दूलह के हिये चोट भइ फिरत लीन तब योग॥

देखा पुरुष चले सब हारी। अब कित मिले जवाहिर बारी॥
अस्त्र शस्त्र दीन्हे छिटकाई। खेह जान सर खेह चढ़ाई॥
दीन्ह बहाय तुरी औ बागा। लीन्ह सम्हार पंथ बैरागा॥
वस्त्र फार मेला गर कंथा। खेल गयो तब सोचो पंथा॥
लीन लकुटिया भा बैरागी। चुटकी दरश प्रेम की लागी॥
छांड़ा राज भोग तज दीना। खप्पर फेंक भीख कर लीना॥
देख जोत भई सुमिरन सोई। भावे वही न भावे कोई॥

भार हाथ योगी भयो छांड़ दीन्ह सुखराज।
केहिकर घर बाहर कौन लूट राज केहि काज॥

ठगी बरात सबै बुधि खोई। बिनती लाग करन सब कोई॥
ऐ सुन शाह बूझ मन माहीं। माल केरि खोरि कछु नाहीं॥
कर्म लिखा फिर मेट न जावे। जो बिधि कीन्ह सोई कछु पावे॥
चलके करो भोग सुख राजू। योगी होउ सो कौने काजू॥
बूझे न्याउ जूझ ना होई। जूझे जाय दोउ जग खोई॥
सहस राज तुमका शिर नावैं। कोटिन त्रिया कहो अस आवैं॥
चलके ब्याह आन पुनि कीजै। ऐसे ब्याह छांड़ सुख दीजै॥

कौन बस्तु नारी देहै प्रान देह जो खोय।
होनहार बीतै जोई योग किये का होय॥

तुम बावर का बोलो बाता। ममिलायो दोउ जग ममगाना॥
चढ़ो बचाय चलो अब हारी। बाजी जीत रही वह नारी॥
जोपै गयो लाज पत पानी। तौ केहिकाज राज सुलतानी॥
तुम अब जाउ करो सुखराजू। मोते काह राज ते काजू॥
सब कर मर्म आज मैं जाना। कोई न जगमहँ मीत अपाना॥
केहिकर माय बाप औ भाई। जो परलोक संग नहिं जाई॥
देख्यों बूझ झूंठ संसारा। हत्यों नियार सो अबहूं न्यारा॥

जेहिपर योगी भयो अब प्रान वही पर देउ।
तबलग योग न छांड़हूँ जबलग खोज न लेउ॥

चला अंत सो सुनत भिखारी। रोवन लगी कटक पुनि सारी॥
उतरपरे सब मीत नवेले। खेला संग भये सब चेले॥
डारे बागे अस्त्र निकारी। पहिरि गर कंथा रतनारी॥
छांड़े हाथी हय सुखपाला। लीन कमंडल कर मृगछाला॥

छांड़ा द्रव्य गर्ब सुख साजू। लीना मंत्र अन्त जेहि काजू॥
छांड़ा घर बालक औ भाई। भये भिखारी दीन्हा भाई॥
छांड़ बरात सो भई तयारी। पेरी बरन भई रतनारी॥

पट केसरिया बरन सज करेंगे रूपावेश।
छूटा धंधा जगत का ब्याह भयो उपदेश॥

चले भिखारी सब दल भागी। रोय बरात रही दुख पागी॥
हस्ती घोड़ भये सब रीते। बाजन राग गये सब बीते॥
भोलाशाह सुठाढ़ झुराना। हरगा ज्ञान औ पंथ भुलाना॥
आगे का नहिं चरन उठावै। नहिं पाछे कछु अस्तर पावै॥
भा मन शोच आग तन लागी। मैं कब जाउँ होउँ बैरागी॥
का मुख मैं दिखलाऊं जाई। घर दीपक निज हाथ बुझाई॥
लाग्यो प्रान देई तेहि ठाऊं। मंत्री धाय परे तेहि पाऊं॥

बूड़े कुलमंत्रिन कहा जिउ दीने सुल्तान।
बिछुरा मानुष फिर मिले रहे जो घटमहँ प्रान॥

मंत्रिन हठ फेग सुल्ताना। ले बरात घर कीन्ह पयाना॥
भइ बायें दहिने दुइ बाटा। पितु यक बाट बंश यक बाटा॥
योगी चला जो सुमिर पहारा। बीर नाथ जहँ हते अपारा॥
सकल बीर तेहि के बस माहां। आज्ञा करै सो धावै ताहां॥
चहे नदी का फेर बहावैं। चहे सुमेर की धूरि उड़ावैं॥
अस गुनवंत सो योगी नाथा। पढ़त भंडार बीर तेहि हाथा॥
तेहि के सहूं चला बैरागी। तौ मैं पुरुष चीन देउ आगी॥

निशिदिन चला बियोग ते चढ़ जो गयो वह बाट।
जाय निकट भा मंडपह बीरनाथ जेहि पाट॥

जहां बैठ वह योगी नाथा। जाय तीर दुइ नायो माथा॥

देखा नाथ सो तीर बुलावा। पूंछा कुशल क्षेम बैठावा॥
कहो मीत कहवां का खेले। तुम योगी अस कहो नवेले॥
अहो सो कौन देश के भोगी। कौन वियोग भये पुनि योगी॥
केहि कारन सर क्षार चढ़ायो। कौन काज पर्बत पर आयो॥
योग अंगार महादुख जीता। सो जाने ऊपर जेहि बीता॥
योग कथा तुम जानो नाहीं। कबतक भयो छांड़ सुख छाहीं॥

योग अपार न जानियो लियो सो बेषउठाय।
राखलियो बौराइहो बैठो राज घर जाय॥

सुनो जो सिद्ध गोसाईं दाता। का मैं कहूं कठिन है बाता॥
भोलाशाह कोउ कर राजा। तेहिकुलमोहिं बिधिनेउपराजा॥
आलमशाह केर घरबारी। सो मैं गयों बिआहन नारी॥
भयो ब्याह रैन सुख साजा। गोरभये उन छल उपराजा॥
दशवां दाउँ वै जितकर लीन्हा। हठ बरिआउ गौन नहिं दीन्हा॥
सभी बरात फिरी पुनि हारी। मैं यह शोच भयो भिखियारी॥
आयो ताक बार मैं तोरा। हुइहौ सिद्ध तू करूं निहोरा॥

सब उपायकै मैं थको तब मैं भयो भिखार।
आयो बार गुसाईं कर जैसी कृपा तुम्हार॥

सुन बौरे बौरी तू बाता। तव पावस जो दिये बिधाता॥
आलमशाह सकल कर राजा। को वह सहो सँवारे साजा॥
जेहिकर कोट गगन ते ऊंचा। सात स्वर्ग तेहि शरण पहूंचा॥
बिजली कोट फिरे चहुँफेरी। बज्जर काल यमका तेहि घेरी॥
बहते नित डरपै संसारा। जाय न सकै कोउ तेहि पारा॥
जाय न मेघ पवन औ पानी। आग न जाय क्षार केहि आनी॥
ऐस अपार कठिन वह ठाऊं। तेहिमां बसे लेश जेहि नाऊं॥

मुनि गँधरब थाके सबै थके स्वर्ग के दूत।
तोहि चौथा कम साज दल हम योगिन का भूत॥
सतगुरु अहै जैस तुम काहा। पै मोहिं वहै दरश कर लाहा॥
कटक द्रव्य ते भये न काजू। तब मैं भार बहायों राजू॥
जब देख्यों तब कठिन अपारा। तब तुम ताकके चढ़ो पहारा॥
तुम गुरु सिद्धि करो जो चाहो। कै माया जो मोहिं निबाहो॥
अब मोहिं बार न सूझै दूजा। चरणनदेउँ शीश तोहिं पूजा॥
तुम्हैं टेक आयों तेहि ठाईं। जानो कहा केहि बार गोसाईं॥
जबलग गुरू न पुरवै आसा। तबलों दास न छाड़ौं पासा।
आयों बार गुमाईं अब तुम बिन नाथ न मोर।
प्रान निछावर देपड़ो आये बार मैं तोर॥
तोयँ योगी बोलसि जनु बौरा। होय न कछु भांड़ेकर जोरा॥
वह तो कठिन योग ते पाई। जो वह हेरत आप हेराई॥
जो तोयँ चहहि जवाहिरलीन्हा। तू कर योग गुरू जस कीन्हा॥
कहूं योगकी योगाचारी। ठाढ़ किया अंगवो दुखभारी॥
दृढ़ आसन निद्रा दृढ़ होहू। दृढ़हो क्षुधा दृढ़काम न छोहू॥
यह चारों का आसन मार्यो। वह सुमिरै तब आप बिमार्यो॥
देखो तारे लाय निहारी। हियरे मांझ जोत उजियारी॥
ध्यान बांध मन ताहिते काया बिरहाजाय।
तब पावस वह हेर तू जब तू जाय हिराय॥
जब जप लै गुरु रक्षा पावा। बैठा थिर आसन जमकावा॥
बैठा भुम्मि डार के छाला। लीना हाथ जाप कर माला॥
शीश नवाय क्षार तन देखा। बैठा जगत क्षार कै लेखा॥
योगी संग हते जहँ ताहीं। बैठे सबै जो ठावन ठाहीं॥

रहे लगे मंदिर चहुँ पासा। सेवहिं नाथ जवाहिर आसा॥
बीरनाथ भइ भीर जो भारी। केहि विधि आनदेव वह नारी॥
नित उठि आपन बीर पठावे। कठिन ठाउँको दांव न पावे॥

दूलह रोवत मेरुपर हुइ योगी बैराग।
रोवत गई बगत घर उठी नगरमहँ आग॥

पैठी नगर जो जाय बराता। नहिं वह धूम न वह रंगराता॥
सुन के नगर ब्याह के चारा। धूम उठी जग भा अंधियारा॥
पूंछे उत्तर न देइ बराती। रोवैं लोग छत्तीसो जाती॥
छावा मांड़ो भयो उजारी। रोवै लाग सो गावन हारी॥
नेगी सब रोवन चहुँपासा। जिनकी टूट जन्म की आसा॥
सुख हुलास महँ रोवन लागी। सुन बैराग भई बैरागी॥
माता सुनत चढ़ाइस आगा। खोय लाज निकसी पुनि बारा॥

ठग मारा भोला नृपति जबहिं चली वह नार।
निकसी धन बैराग ले देत कोटि धिरकार॥

निकसी नारि देत धिरकारा। आयो खोय कहां मम बारा॥
का लेगयो बिवाहन साथा। का ले घर आयो पुन हाथा॥
दियो ब्याह आग मा डारी। कस कीनो मम बंश भिखारी॥
मैं वह योग जुगत ते पावा। तुम लेके तहँ कहां गँवावा॥
कीन्हो मोर दीप अँधियारा। तुम का लेआयो पुनि बारा॥
अब मोहिं कह सो दियो बनाई। जहँ मम प्रान बैठ है जाई॥
मैं वहँ जाय फेरिले आऊं। जरिगा ब्याह बंश जो पाऊं॥

योगिन भई बियोगिनी शीश चढ़ाइस छार।
मंगलचार हुलास में पड़िगये बजर अँगार॥

मंत्रिन कहा समुझि मन माता। बंश गयो जिन खोवस छाता॥

हम तेहि कोटि यतन ते आना। नाहिंत देत तहां वह प्राना॥
बैठो मंदिर करो मन धीरा। बंश तोर आइहि तेहि तीरा॥
बीर नाथ परबत पर जाहां। जाय सो बैठ बंश तो ताहां॥
हम कह करैं दई जो कीना। जेहि सुखमा अस दुखकै दीना॥
दिन दश घर बैठे रिस मारी। पुनि तेहि चैनतेआनहुँबारी॥
जाय जवाहिर का ले आयेउ। तब प्रतीति ते बंश बोलायेउ॥

हम बाहेर ते हार गये गौन न दीन्हीं बारि।
आवो तुम समुझाइ वह दिनदश क्रोध सँभारि॥

तब समझी घर बैठी नारी। हिये आग फूजी तन जारी॥
बहिन न अहै अहै मम दूती। आपनिपूत मोहिं कीन्हनिपूती॥
बंश मोर सो कीन्ह भिखारी। घर बैठाय गोद महँ बारी॥
होयगा घर बाहर सब सूना। जिन जेहिमुना शीशनेहिधूना॥
ब्याह न भयो ब्याधि उपजानी। बिष भा भोग आग भा पानी॥
दूतिन पढ़न पढ़ी जेहि ताहीं। लाग बुलाय एक इक ठाहीं॥
जो जेहि गाउँ सो गयो तहांई। अचरज सोग जगत गा छाई॥

ब्याह भयो अचरज मनो नटचाटक का खेल।
परी गई घर आपने आग जगत महँ मेल॥

गई जो परी देश घर माहां। बैठा पड़ा छतरपट ताहां॥
देखे पिता सूर के भांती। पूंछा कहां बस्यो सब राती॥
भई जो तुम यौवन मदमाती। खोजत फिरौं पुरुष सब राती॥
सत्य कहो निशि कहां बितायो। कौन पुरुष जेहिने मनलायो॥
ठग गई परी कांप सब अंगा। देन न उत्तर मिटिगा रंगा॥
तौ पुनि अधिक पिता शंकाना। आज्ञा दीन देउ बंदिखाना॥
तब चेरिन लेके बैठारें। पाउँ काढ़ि जंजीरे डारें॥

बंदिखाना रोवैं परी का हत्या हम कीन।
मारा उन बिछुराय जिउ हम सो आन जिउदीन॥

हंस बिरह भा कठिन अपारा। बैठ पहाड़ न सूझै डारा॥
हिये शोच कर मींजे हाथा। कहा बिछोह पड़ो तजि साथा॥
कहां सो वह शीतल कैलासा। कहां सो सेज सुरत वह बासा॥
कहां सो मीठे अधर अमोला। कहां सो शब्द सुहावन बोला॥
कहां हाथ जिन दीन्हउधारा। कहां सौगात सौबासकधारा॥
कहां ललाट दुइज उजियारा। कहां बैन जिन चाटक डारा॥
कहां सो ब्याह कहां वह भोगू। अब वह पंथचलूं केहि योगू॥

काया जीउ मिलाय के किन बिछोह असकीन्ह।
हौं छांड़ो जेहि कारने वही बिछोहा दीन्ह॥

यही शोच भा बाचर रंगा। यही शोच भा पंख पतंगा॥
पर तेहि शोच हिये बहराना। झरना आंसचले झहराना॥
बिरह सोग सगरो जगछावा। स्वर्ग पताल देख पछतावा॥
जगसुख छांड़िके चला भिखारी। जहँ सो बसे जवाहिर बारी॥
ततखन भूरे बाज अहेरी। राज कहां सब देखैं हेरी॥
ततखन शोच दीन्ह निजबाजू। पड़ा जो शोच कहां गा राजू॥
सब बन हेर जो हेर पहाड़ा। ठाढ़ा तरी नहीं असवारा॥

रोवत चढ़े सुमेरु पर हेरत हेरत बाट।
तब देखा ब्याकुल बिरह बैठ तहां तेहिपाट॥

देखा बैठ पाट पर पावा। जानो प्रान मुये तन आवा॥
बिनवै लाग मीत समुझाई। का तुम कीन्ह बिदेशन आई॥
उठि अब देउ तुरी पर पाऊं। चलो रूम सुमिरो निज ठाऊं॥
छांड़ो बलख पिताकर राजू। का तुम कीन्ह खोय सब साजू॥

कहो सो आपन बिथा उघारी। कस कों धों यह पृथ्वी सारी॥
हम तुम त्याग तजा संसारा। सो तुम कीन्ह जगत अँधियारा॥
मात पिता कर देश बिसार्यो। आन बिदेश कहां तन जार्यो॥

कहा बिसारो काह कह जियो करो संभार।
तजो मीर औ बीचबन चलोसुमिरिआगार॥

रोवा सुन बावर यह बाता। कहँ घर मोर पिता औ माता॥
कहँ मम देश मीत सँग कोई। जो मोहिं संग सँघाती होई॥
मोहिं सो अहै चीन को जाना। जहां बसै मम नित्य पराना॥
मोर सो जीउ जवाहिर हाथा। सो वह कठिन पंथ औ साथा॥
अहै सो चीनदेश वह दूरी। सुख बैठे मारग वह सोरी॥
काया बिरह जरै तेहि लागी। मैं बावर तेहिकर बैरागी॥
कल्प्यो माथ वही के काजा। जिन सुखदे अस दुखउपराजा॥

शीश निछावर करूं मैं प्रान पंथ वह देउँ।
तबलग आप हिरासहूं जबलग हेरिनलेउँ॥

कहि यह बचन चला परदेशी। सुमिरि चीन वह नाउ बिदेशी॥
सेवक रोय चरन तब लागे। हम अब मार चलो तुम आगे॥
हमका उतर देब तुम पूंछे। जो तुम छांड़जात अब छूंछे॥
जो तुम चहो कहुँ अंतसिधारा। हमका मारि मिलावो छारा॥
चलो सो लौट पास सुल्ताना। तब भावे जब करो पयाना॥
उनका गहि सुखपाल चढ़ावा। चलत चीन कह रूम चलावा॥
आये रूम नगर के माहां। बैठे अहमदशाह पति ताहां॥

बैठारा तब निकट ले भा तन देखि बियोग।
पूंछेलागा छतरपति कहो अरथ सब लोग॥

बोले पुरुष जो शीश नवाई। अर्थ अपार कहा नहिं जाई॥

रैन बिछोह भयो बन माहा। जान न जायगयो पुनिकाहा॥
भोर भये परबत पर पावा। बोला तबै अर्थ निरथावा॥
चीन के देश जवाहिर कोई। तेहिकर नाउँ लिये पुनि रोई॥
का जाने कहुँ आपुन्ह देखा। बावर बचन जाग बिशेखा॥
अब पूंछो अब बिरह बियोगी। करौं खोज जस होय संयोगी॥
तब सुलतान हंस मन लेखा। तुम रहे रूप चीन कब देखा॥

शरवन सुन्यो जवाहिरै की देखो भरि नैन।
वही बतायो ज्ञान ते कस खोयो सुख चैन॥

ढग्के आंस लेन वह नाऊं। केहिते कहूं कहां वह ठाऊं॥
को जगमहँ अस मीत गुसाई। जो मोहिं करे मीत के ठाई॥
निशमोहिं ब्याहभयो वह पासा। दरस न परस भयो कैलासा॥
अब मोहिं प्रान भयो वह तीरा। रूप पड़ा बिन प्रान शरीरा॥
जस तज डार फिरै भुइँ पाता। तस बिन प्रान अहै मग गाता॥
छांड़ो मोहिं मैं चीन सिधाऊं। मग वह देश हेर फिर लाऊं॥
मैं परदेश संग केहि लेऊं। हूं जेहिकर तेहिका जिउदेऊं॥

शोच करै जिन कोउ अब प्राण हाथ मम नाथ।
जीवत वाको मिलूं फिर मरूं तो मारग माथ॥

सुन सुल्तान शोच भा भारी। चाटक देख कीन केहु नारी॥
अहै सो रूप चीन कब देखा। कहे बात जस बावर लेखा॥
केहि बिधि रैन सो भयो बिवाहू। बावरकीन्ह पढ़त दे काहू॥
कहाजान तुम होहु भिखारी। देउ मँगाय के अबहीं नारी॥
जो बिच जान चीन महँ पाऊं। करौं साज ताही सँग धाऊं॥
जो पंथी वह देश ते आवै। कहे भेद परतीति दिलावै॥
धीरज धर जिन होउ भिखारी। चला चीन तब भेद बिचारी॥

कहा सो सब सेवकनते छांड़ो कोइ न साथ।
तेहिबावर हुइजाय वे दिये जाय दुख साथ॥

यही जो शोच पड़ा चहुँपासा। गा हुलास भा जगत उदासा॥
योगी जौन देश ते आवैं। करभींजें योगन निरथावैं॥
पूरब देशके योगिन देखा। कहा मनोहर मालत लेखा॥
दखन देशके आय भिखारी। शीश धुना जो बिरह बिचारी॥
भई ये कला मनोहर ताहीं। परीरूप देखा केहि ठाहीं॥
आये पछुव देश के योगी। देख बिरहते अधिक बियोगी॥
कहा कि को यह देई ज्ञाना। गेहर भेया लखि माह भुलाना॥

छऊखंडके योग सब तब आये तेहि ठांउ।
कोऊ न बहुरा चीनते लेत जवाहिर नांउ॥

पड़ा जो शोच नगर दिनराती। देश देश का पठई पाती॥
जो जो सुनै शोच तेहि होई। खोज किये नहिं पावै कोई॥
बीते दिन ऊंचे दुख दूना। जरै जो मांस हाड़चन चूना॥
उठ उठ चले बिरह बैरागी। तजे न कोउ उठे तनआगी॥
रोवै नित उठ क्षार चढ़ावै। चले चीन पै चलै न पावै॥
पुरुपन भोग हरा तेहि संगा। तिरियनगाअभरनतजिअंगा॥
बसा देश भा सूनधुंधारी। बिरह आग भा जगत उजारी॥

रूम उदासी शोच वह चीन पड़ा उपदेश।
कँवलझुराने शोच महँ बिरह आगमन लेश॥

कँवलसो शोच जरै दिनराती। कंथ कहां जो पठऊं पाती॥
मोहिं करतार जो जन्म अभागी। कंथ चला मैं संग न लागी॥
कियो न ब्याह रह्यों ना बारी। अधजल माहँ दई मोहिं डारी॥
कबलौं रहे जन्म दुख डाहू। कंथ बिना को करे निबाहू॥

यही शोच धन सूखन लागी। छिन छिन उठै हियेमहँ आगी॥
पूंछे आन चीन की बारी। केहि विधि खोजैं कंथ पियारी॥
हत्यो पवन की मानुष देवा। देखो कैस रह्यो जो सेवा॥
कहो भेद धन पीउ कर रहो बीच जो पास।
हत्यो कौन सत कहँकर गयो कौन कैलास॥
सुन सुन शउ सूखे हिय मांहा। कहे न कौन हनौ की काहा॥
शशि नाय मुख पाट न खोले। गुंग बरन भई बात न बोले॥
हिये डाह दुख देगे नाहा। गये अब कहूं बनाऊं काहा॥
नैन रहित बरषा झर लावैं। एक दुरें दूजे भर आवैं॥
दिन दिन धन तन लाग झुराई। जल भोजन सब गयो भुलाई॥
मात पिता दुख भयो अपारा। ब्याह न कीन आग सर डारा॥
पण्डित वेद ज्ञान मथ हारे। ब्याह कथा महँ पार न पारे॥
रोवैं तिरिया पुरुष सब देखि कंवल दुखभार।
करें शोच कर मींज के रहें अन्त गुन हार॥
चली चीन व्याकुल वह नारी। जामो वंश भा योग भिखारी॥
सुन सुन कंवलकी बुधि चतुराई। साजि सगुन जेहिते बौराई॥
जहँलग दूत कर्ण बुधज्ञानी। तेहि सब नगर खोजजिन आनी॥
सहस थार वह साज मिठाई। तें सब पढ़ पढ़ मंत्र चलाई॥
लीना बास सुगन्ध फुलेला। जेहिमा कोट पढ़न विधि मेला॥
अभरन भू फिर और बनावा। तेहि पर पढ़त अनेक पढ़ावा॥
डंडिया सहस लीन्ह सुखनारी। ते सब पढ़े पढ़न गुनहारी॥
खैर सुपारी पान सब लोना पढ़त पढ़ाय।
बावरहुइ लागे संगे एक पान जो खाय॥
कै पुनिसाज जो चढ़्योविमाना। सुमिर चीन कहँ कीन पयाना॥

चलीं सखी जो चतुर सयानी। चढ़ बिमान बाहर बहिरानी ॥
सबै भार परकार चलाई। जेहि पर पढ़त अनेक पढ़ाई ॥
चलीं सो सब सुमिरत कर्तारा। जो वह कौम उतारन हारा ॥
जो जेहि की सेवा नित करई। सो तेहिका सुमिरत पग धरई ॥
पैग पैग पर शीश नवावै। निश दिन आपन देवमनावै ॥
सकुचत जायँ सबै मन माहां। हार नियाउ कहब का ताहां ॥

पैग पैग मग सुमिरिहै आपन गुरू औपीर।
यहि बिधि करत बयान सो गई चीन के तीर ॥

आई चीन शहर नियरानी। सुना बहिन मुक्ताहर रानी ॥
आई फेर बढ़ावन रारी। आग बुझाय चहत अधिकारी ॥
यहि बैठे मन करत बिचारा। तबलौं आनपहुंच वह बारा ॥
आन बिमान बार बिलमानी। उतरन लगी सखी औ रानी ॥
तब महताब मँदिर पग दीना। चल मुक्ताहर आगे लीना ॥
मिलै लाग दोनों हिय लाई। दुख हिरदे उमड़ा उथलाई ॥
रोवे लग मुक्ताहर नारी। मिल्यो न आन गोरहितप्यारी ॥

जाई एके ठानबिधि दिये दुःखकहि न्यार।
दूजेजन्म की कौन तब हिये लाग लही बार ॥

तब महताब डाहदै रोई। कत दै जन्म दैव मोहिंखोई ॥
खोयों आपन बंश दुलारा। निलज भयों सगरो संसारा ॥
माड़ो मोर आग कै दीन्हा। मैं पापिन बनबास न लीन्हा ॥
यहि बिधि भेंट भई इकठाऊं। सखिन आय सब टेकैंपाऊं ॥
आनेलाग मँदिर परकारा। और अभरन का खुलापिटारा ॥
लखि मुक्ताहर उठी रिसाई। को खाई तो पान मिठाई ॥
को पहिरै तो अभरन राता। जोपै टूटगयो वह नाता ॥

फिरिगा कटक बरात पुनि फिरा आप सुल्तान।
दूलह फिरा न पायसो तो आवस कह ज्ञान॥

पूंछो कह मैं तुम पहँ आई। तुम आते मोहिं आगलगाई॥
का अस जान ब्याह तुम कीना। कौन दुःख फिर गौन न दीना॥
मैं कुछ दुःख न कीन्ह तुम्हारा। तुममो राज कियो अँधियारा॥
तुम्हीं पानदै कीन्ह्यों ब्याहू। सो अस किह्यो न छाजे काहू॥
पुनि सो कहो आग कहिडारी। जो बैठाय रखो घर बारी॥
भयो भिखार बंश ममबारा। हिय न फाट असनिठुर तुम्हारा॥
तनमन लाय दीन्ह तोहिं आगी। मैं सोजरयोंतोहिं आंच न लागी॥

आग दियो मोहिं मांड़वै किह्योमो मँदिर उजार।
लीन्हों केहिकर दाउँ सो ब्याह ठांह दैवार॥

सुन तिरिया मोसे जिन जूझो। आपन न्याउ जाय घर बूझो॥
जो तो पुरुष बिवाहन आवा। मोर बार बर दूजा लावा॥
तेहि मैं ब्याह दीन जो बारी। रहा सो वही मांझ सो नारी॥
मोर भये सो दृष्टि न आवा। जिन देखा तिन दोष बतावा॥
तेहि ते फिरी बरात जो हारी। हियरे लाय राख हम बारी॥
तेहि दुख रहूं नित्त नित रोई। तोहिंका कहेसि मोहिंका खोई॥
देखूं दुखी जो बार दुलारी। निश दिन जरूं तोहिंकी जारी॥

तोइ मूरख अतिछल किये आयसि अब केहि ज्ञान।
आपन सब बाहर करस फिर कर बेग पयान॥

सुन सो बात कीन्ह अनखानी। सांझ भई पै पिया न पानी॥
सखी जो बैठी भूंखी प्यासी। कोइ काहू की करै न दासी॥
तब दूतिन सब पढ़न चलाई। चारो द्वार पढ़न सब छाई॥
होगई नीर मँदिर की नारी। बिनती करै लाग मन हारी॥

औ मुकताहर माथ नवावैं। बांह गहे ठाढ़ी समुझावैं ॥
तोहिं लागस जारन मोहिं आई। वह समझाउ आग जिनलाई ॥
जेहिते हार गयो तो पीऊ। तेहि समझाउ देत बलि जीऊ ॥
जाहि मनाउ सो ताहि कह जित तोहिं कीन उजार।
जो वह तेरे सँग चले को तेहि राखनहार ॥
जो महताब बात सुनि पाई। कहा कि केहिकहँ लेउ मनाई ॥
पढ़त भरोसे मण्डल चढ़ी। सीढ़ी पाउँ धरत कुछ पढ़ी ॥
अभरन पानो तेल सुबासा। लेके चली जवाहिर पासा ॥
दोतिन सखी चढ़ी तेहि साथा। अक्षनलिये पढ़त केहि हाथा ॥
कमलतीर जो शब्द सहेली। परथम उन चतुराई खेली ॥
लागीकान कमल समझावै। अब महताब जो तुमपहँआवै ॥
लियो न वह कर एको पाना। रहे न गात भये तुम ज्ञाना ॥
पढ़त ठगौरी सैन महँ अभरन पान फुलेल।
तोहिं सब चतुराई किये एको हाथ न मेल ॥
बैठी चन्द्टेक चतुराई। तबलौं नारि निकट चलिआई ॥
देखिसि रूप बदन उजियारा। सुमिरत तब आपन करतारा ॥
दूतिन के गये दून हिराई। पढ़त दूतकी गई भुलाई ॥
धनकर्त्ता जिन केश सम्हारी। कसनहोइ लखि पुर्ष भिखारी ॥
कहेसि नारि सुन राज दुलारी। ले मोहिंतार बहत मँझधारी ॥
बेड़ा बूड़जातहै मोरा। ले तोहिंतार होतयश तोरा ॥
मंदिर कोट मो भयो उजारी। लियो बसाइ बसावनहारी ॥
कर मंदिर उजियार अब चलघर दीपक बार।
राख सो मोकहँ जगत महँ तोइ आपन कुल मार ॥
सुनधन बचन सुरोवन लागी। वह घरबार म लाऊं आगी ॥

अधिको कसन पड़े अंगारा। जिन ममवारि बैस दुख डारा॥
तहँवां मोर मंदिर औ देशू। जहां बसे हम कंथ नरेशू॥
जाको अपन दीन्ह कह बांहा। हूंनेहिकी वो मोरा नाहा॥
गा सो बिछोह प्रान लै साथा। मोहिं छांड़ बैरिन के हाथा॥
जरूंसो बैठ निलज वन माहा। तुमका दहौ दहै मोहिं नाहा॥
तुम्हरेदेश आग किन लावा। तुम सुमिरो जिनआगिबनावा॥

जाउन तुम घर आपने सर आगन मोहिंदेउ।
मोहजरेका जारिहौ आहसोप गुनलेउ॥

सुनो बारितुम कह किन जारी। तुमतो आग आपसर डारी॥
कोउ नगर सो देश तुम्हारा। जेहिपिउ किहो सो बंश हमारा॥
पिउ आपन कह देउ निकारी। कियो न लाज अहोजस बारी॥
तुमपंडित कोइ ज्ञान न पूजा। पैअस कियो करै नहिं दूजा॥
जो दलसाज बियाहन आवा। तेहिछुट कौन सो कंथ कहावा॥
तुम प्रीतम कर नाउँ न लीन्हों। प्रान कहो किहि कारन दीन्हों॥
तुम असनिडर होइ नहिं बेटी। पिउ आपन का डारयो मेटी॥

छांड़ देउ अब निठुरई चल घरदेश बसाउ।
दिन दश मंदिर पांउदे फिर नैहरका आउ॥

लागै आग सोवह ससुरारी। जेहि तुमलायदियोमोहिंगारी॥
मरे जाय वह तोर पियारा। जो मम कंथ कहावनहारा॥
पिउमोर भानु और को दूजा। काकोउ राहुबरन वह पूजा॥
जेहिते मोर भयो गठजोरा। दोउजग गांठि चहैं कोउ छोरा॥
हूं दोउ जग दासी तेहिकेरी। जरूं बिछोह न देखूं हेरी॥
तेहिपर प्रान करव जिउ खोऊं। रती रती लोहू भुइँ बोऊं॥
तुम आयो दूनी ले साथा। जाउ सो मोर क्षागले हाथा॥

लागे आगी दोउ घरै नैहर औ ससुरारि।
मैं अब प्रान नशावहूं इच्छा पूज तुम्हारि॥

काहेक प्रान देउ तुम बारी। मैं देखन आयों दिन चारी॥
मोहिं माता छुट और न जानो। चीन कोउ जन दूसर मानो॥
सो पुनि चलो बैठिघर खेलो। पैतुम एक बचन जिन पेलो॥
तोहिंकारन अभरन ले आई। सो केहिका पहिराऊं जाई॥
अभरन करो फुलेल सो लेहू। खेलो न हँसो सोग तजि देहू॥
लेउ पान औ भोग मिठाई। खाउ तबै मम प्रान जुड़ाई॥
रह हुलास जिन करो बियोगू। तुमरे सोग होइ मोहिं सोगू॥

मैं आयो तोहिं कारने राख मोर अरमान।
पहिरो अभरन सुखसहित खाओ हाथ ले पान॥

तुम बाचर बोलो अस बाता। कत भावै मोहिं अभरन राता॥
मैं तन चलूं क्षार सर मेलूं। पलपल जन्म काल अस पेलूं॥
निशिदिन करूं क्षार सर मेला। कत लाऊं तौ तेल फुलेला॥
मैं पापिन का करूं सिंगारा। कहां पीउ सो देखन हारा॥
अब यह पान होय मुख मोहीं। केहिबिधि खाउँ न सूझै तोहीं॥
हूं योगिन बैठी घर माहां। लैगा भोग भगत तब ताहां॥
केहि भावै तो पान मिठाई। आपहि खाउ कि दीनो भाई॥

भावे जगत लुटाउ तेहि भावे अपना खाउ।
पहरो अभरन आपने मन भावै तहँ जाउ॥

सुन मोहिं प्रान उतर भल दीन्हा। माता केर मान भल कीन्हा॥
अब दुलहिन तौ टेको पाऊं। रख मोमान लौट घर जाऊं॥
पान एक मोर तुम लीहो। पान सो मोहिं जगत महँ दीहो॥
तबहीं कँवल पान कर लीन्हा। आंचर ओट शब्द का दीन्हा॥

शब्द जो खोल करी चतुराई। एक दासी का दीन सनाई॥
पान खाय चेरी बौरानी। जामी संग पड़ा तब जानी॥
सखी जो देख उठी रिसयाई। दूतिन के गये दून हिराई॥
काट पढ़त पढ़ फूंकेऊ सत सुमेर मंडोल।
उलट पड़ा परगट सोई उड़े आप होइ छोल॥
भइ मन लाज उतर मुहँ आई। चेरी लाग संग लिपटाई॥
तब मुक्काहर लख धिरकारी। यही काज आयसि हत्यारी॥
अब यह बात सुने सुलताना। रखे न लाज न छांड़े माना॥
खा अब भोग रैनि रह सोई। जा उठ भोर न जाने कोई॥
उतर न दीन गई मन हारी। भोग भुजान भूलगई रारी॥
दूतिन मन सुमिरैं करतारा। तोहि सौंपत राखो भिनसारा॥
बीर मनाय सो रैनि गँवाई। भोर चली नहिं बात जनाई॥
पुनि जो चढ़ी बिमान पर होयगा धूम लिलाट।
रावत आई तेहि दिशा रोय फिरी तेहि बाट॥
चली छांड़ सब भोग मिठाई। सो सुल्तान लै नदी बहाई॥
मच्छ कच्छ जल महँ बौराने। निकस नीर बाहर बहराने॥
तब सुल्तान शोच मन कीना। यह घर मोर ठगोरी दीना॥
सतमन जानि सराहे बारी। जिन पतिराख लीन्ह कुलतारी॥
सबै लोग मन सत्य सराहैं। धनि कामिन जो सत्य निबाहैं॥
दुइ जग तार सत्य जिन राखा। निर्मल भयो सत्य तैं भाखा॥
सत्य ते होइ जो शीतल आगी। सत्य ते जाय पाप तन भागी॥
कासिम सत सुमेर जेहि का तेहि पवन झकोर।
कोटि पाप भागे तुरत एक सत्य जेहि ओर॥
धन हिय शोच परा बेहि केरा। ब्याहकियो फिर लीन्ह न फेरा॥

दीन भुलाइ बोल वह राती। फिरे न आप न पठई पाती॥
नहिं मो पंख जाउं वह देशा। न कोइ पंख जो कहूं संदेशा॥
यही शोच धन हिरदे बासा। रही सांस पिउ दरशन आसा॥
तन जस पात पवन ले डोलै। दरकै आंस बात जो बोलै॥
देखा सखिन कंवल कुम्हिलानी। पड़ी शोच समुझावैं आनी॥
देउ न प्रान रोय धन गोरी। यक दिन दई मिलाई जोरी॥

हेरो पंथ जो पीउ कर प्रान रोय जिन देउ।
यह दस दिवस बिछोह है पुनि सुख बरसे लेउ॥

हेरन लाग पंथ बैरागी। ठाढ़ रहै नित मारग लागी॥
पड़ी समंद प्रेम के नीरा। अगम अथाह न पावै तीरा॥
उठै लाग जो लहर हिलोरा। मन पतवार बहै चहुंओरा॥
रहे जो निशि दिन ठाढ़ बियोगी। फिरै न कोइ बिदेशी जोगी॥
कहै न कोउ प्रेम संदेशू। रहा थकित मन बाउर भेशू॥
बीता ग्रीषम मास दुरासा। आन परी बर्षा चौमासा॥
घन बादर घुमड़े जब लागा। दुख जो बाढ़ स्वर्ग लो पागा॥

उतर जेठ ग्रीषम गई सूखा रोहन पंथ।
अब जलथल सब बूड़ेऊ केहि मग आये कंथ॥

लाग असाढ़ मेघ घहराना। कंथ बिदेश कहां धौं छाना॥
साजे मेघ चढ़े ले पानी। बीचे बीच बीज चमकानी॥
श्यामघटा धाई चहुंओरा। बरसै लाग मेघ झरघोरा॥
पपिहा रटै लाग पिउ पीऊ। बिरहिन आग दीन्ह तनजीऊ॥
दादुर मोर करैं बहु शोरा। बिरह काल भा दारुन मोरा॥
अदरा बीज पड़ा भुईं जामा। जग हरियर मोहिं आरे कामा॥
आय पुनर्बसु अब नियराना। घर उजार पिउ अंतभुलाना॥

बिरहआग बरषाभई बरसे बूँद अँगार।
जग शीतलहरियरभयो मोहिंजोरकर्तार॥

सावन जल थल पूरापारा। हूं बिन कंथ पड़ी मँझधारा॥
झिमिक झिमिक जो बरसे मेहा। पवन झकोर दहै मम देहा॥
हरियर भा सिगरो संसारा। मोहिं करतार अग्नि महँ डारा॥
पुष्य नक्षत्र अस घन झरलाये। चला सरेखा सेज नहाये॥
नैन चुवैं जस सावन ओरी। पिउ बिन नाउ को खेवै मोरी॥
सखी कंथ संग करैं किलोला। रातापहिरि सु झूलें हिंलोला॥
मोर सिंगार सो लैगा नाहा। मही को बांह पड़ेउ औगाहा॥

पवन झुलावे मनहि मम बिरह झकोरे देय।
गगन चढ़े उतरे अवनि पिउबिन थांभकोलेय॥

भादों बिरह भयो दुख भारी। घन अँधियार रैनि अँधियारी॥
पिय बिन सेज काल है डासी। चमक बीज लागे हिय गांसी॥
बरसे मघा अवनि झरलाई। बूड़ाबूड़ जगत जलछाई॥
परलो जल सिगरे जग छावा। घन औगाह पार को लावा॥
बोहित मोर बहा मँझधारा। लिये न कंथ लगाऊ पारा॥
तुम बिन नारि परी औगाहा। काढ़ न लियो बिरहनद नाहा॥
भादों बिरह समँद दुखभारी। कहो कि जल बिन बूड़ै नारी॥

जोबन समँद अथाह भा उठी लहरसंग बाउ।
धन बूड़त औगाह महँ पियसो पार लगाउ॥

लाग कुँवार सोच चौमासा। पूजन आस फूलि बनकासा॥
उतरा चला पूर जग पानी। मैं जु भई जल समँद मिलानी॥
हथिया बरसे पवन झकोरी। नैन चुवैं जिमि छपरा ओरी॥
गइ बरषा जल सूखन लागा। फिरा न अजहूं कंथ सभागा॥

उवा अगस्त सोखजल लीना। पंथी सुघर पयाना कीना॥
अबहूं निठुर आउ घर बारा। तो बिन नारि न पावै पारा॥
मोरा प्रेम सँदेशी थाका। केहि पठवा जो बांधे साका॥
निठुर बिदेशी आजहूं सुमिर नेह घरआउ।
नारी घेरे बिरह दुख बेग सो आनि छुड़ाउ॥
लागी शरद व कातिक आवा। चीत चला पै मीत न पावा॥
बरसे जात सुवाती मेहा। आस न पूज गई भुँज देहा॥
चातक भइउँ रटत पिउ पीऊ। हूं जेहि पास न पावों तेऊ॥
मोर न आस पूर भइ कंथा। डाह बिरह कीनो भस्मंता॥
सखियां फूलन सेज बिछावैं। सुख सोवें मोहिं दाह दिखावैं॥
दिवस सुहावन निशि उजियारी। मोहि कहं कंथ रात दिन भारी॥
थाका पंथ चले नहिं कोई। केहि ते कहूं बिरह दुख रोई॥
पवन बिदेशी पिउ जहां जाय बहो वह देश।
बिरह जरावै नारि कहं तुम ले कहो संदेश॥
अगहन अंग जो शीत जनावा। निशि बाढ़ैं दिन पंख लगावा॥
सूरज बूड़ हिमंचल माहीं। शीतल घाम ओस भइ छाहीं॥
धावत दिवस बिलंब न लावै। बैरिनि रैनि काल सम आवै॥
पिउ बिन रैनि बजर भइ भारी। काल सेज नागिन भई कारी॥
रहै न छिन नैनन महँ आंसू। दुबहरभई निशि अगहन मासू॥
लाग होन बिरही अंधियारी। पी बिन कौन करे उजियारी॥
पल पल युग बीते दिनराती। का तेहि जन्म आह यहि भांती॥
बीत जात जग जन्म सब बिरह जरावत देह।
केहि ते कहूं संदेश यह को अस मीत सनेह॥
लागो पूस शीत जग छावा। बिरहा काल जाड़ ले आवा॥

जूड़ सेज निज बीती सारी। बूड़े जीउ हिमंचल धारी ॥
थर थर तन कांपे धन जीऊ। केहिबिधि जाय जाड़ बिनपीऊ॥
टूटें आंस दरें जनु ओला। कँपे हिया मुख जाय न बोला ॥
आवन कंथ बैठु हुइ भाना। तोहि बिन जाड़ न छांड़े प्राना॥
तेहि धन सुखी कंथ जेहि पाहां। हौं बिन कंथ हिमंचल माहां ॥
सिगरी रैनि रहूं तन झांपे। पी बिन मरूं सेज हिय कांपे ॥

जाड़े प्रान न छांड़ निशि उदय होहु पिय मोर।
रैनि बिहानी रोय सब भोर करे दुख तोर ॥

लाग्यो माघ पड़े शठ पाला। जूड़ रहे अवनी सब काला ॥
ज्यों ज्यों ओढ़े गात समेटे। त्यों त्यों जाड़ उठे हिय सेरे ॥
कठिन सो जाड़ रैनि दिन माहां। मोहिंदुख माघ भये बिननाहां॥
गयो छांड़ अधजल मोहिं मारी। दै बिछोह पिय सुरत बिसारी ॥
उदय भानु लागे तन घामू। तोहि बिन नाह काल चौयामू ॥
सखी सो भोग करें जग माहां। ऐसे दिवस बसे पिय काहां॥
पूर आस धन होय हुलासा। आय निकट भा फागुन मासा॥

माघ मास धन ठिठुर रही बिरह खायगा देह।
फागुन आये मिलै केहि जब होरी जर खेह ॥

फागुन लाग जो पवन झिकोरी। बृक्ष पात करई तन छोरी ॥
टूटे आंस अवनि तज डारी। तस बिन कंथ परो मँझधारी ॥
बैरी बिरह भयो तन लागन। करे दाह आयो जग फागुन ॥
चहुंदिशि चांचर होय धमारी। हौं सो रहिउँ छार शिरडारी ॥
सब जग उठ सो बास गुलाला। मोहिंशिरछार कंथ तोहिंपाला॥
अब तन करूं जार भस्मंता। तहँ उड़ परूं बसै जहं कंथा ॥
हौं जर भइउँ बिरह जस होरी। को तहँ चाह करे पुनि मोरी ॥

पवन जाय आवै सदा कहे न प्रेम संदेश।
उड़ तेहि कारन आर होय पडूं कंथ जेहिदेस॥
चैत बसंत भयो जग राता। वृक्ष निपात भयो झरि पाता॥
राता बन फूला होय टेसू। मोहिं कीना विधि योगिन भेसू॥
पलही जग बिन पत्ता सारी। कत पलही काया दुख जारी॥
सुख आनंद करे संसारा। मोहिं दुख बिरहक वार न पारा॥
जन्म ते दीन्ह दई दुख भारी। दूजे कंथ आग महँ डारी॥
धन कर जरन कंथ कहं भावै। तेहिते निठुर सुमिर नहिं आवै॥
अबहूं आउ निठुर परदेशी। धनहि जराय भयो का लेसी॥
कँवल कली जोबन भरी फूलरही जो नार।
आओ बेगन भोरभये बिरहा करत उजार॥
भा बैशाख तपन भइ दूनी। पिउ न फिरा धन मुई शिरधूनी॥
बहै लवार उठै जग धूरी। तबहुँन फिरा बाट भइ भूरी॥
पानी पवन भयो सब ताता। पिउ बिन करै को शीतलगाता॥
बिरहावायु बहै जगताती। जोबन तेल दिया तिन बाती॥
सरवर मांझ कमल बिलसाना। धनकर सुख हिये म हेराना॥
सूखी नारि दरश बिन पानी। हरबालायनं सींचो आनी॥
तू बिन नारि जरत यह मासा। कँवल बिकस धन मरै पियासा॥
सरवर कँवल किलोलकर धन तन सूखतजाय।
उपजी बेल झुरात है बेग न सींचो आय॥
लागो जेठ भयो दिन भारी। सूर सुनो भा देखे भारी॥
सूर बिरह है संग सिधारा। बोबन लाग सो जगत अँगारा॥
बहै बयार अगन के झोंका। बिरहिन अंग आग दे फूंका॥
घर बाहर जग आग लगाई। निशिदिन तपै सही नहिंजाई॥

आग भयो तन चोली चीरा। रक्तजरा भा सेह शरीरा॥
भई सो देह विरह की भाठी। हाड़ जुरा न जरे ज्यों काठी॥
जारे बिरह सरसुन मांपू। रक्त श्रोट निकसा है आंसू॥

हाड़ मांस जरिचार भये रही जो मांजर सांस।
फिरा न तबहूं पिउ निठुर बीते बारह मास॥

वर्षमास धन रोय गँवावा। पिउ न फिरा बर्षा फिर आवा॥
आव असाढ़ शीश पर गाजा। घर उजार को साजेसाजा॥
बीता बरष फिरा नहिं कोई। केहि पथ जाउँ कहूं केहि रोई॥
मुई सो रोय मँदिर के माहा। कबधौं दरश दिखावे नाहा॥
तन गा सूख पियर भा पाऊं। दीन चहे पिउ हेर पराऊं॥
रहा न ध्यान रटन पिउ केरी। होयके पवन जाय तेहि हेरी॥
पपिहा भइ जस बावर पांखी। पथ चकोर अस चितवे आंखी॥

सो तेहि सूतभये जबहिं रोम रोम भा जीउ।
निकसे दूसर शब्द नहिं छांड़एक पिउपीउ॥

हेरत पिउ धन आप हिरानी। तन भूली मन ज्ञान भुलानी॥
रोवन भइ जोगन के भेसा। उघरा गात छूटगये केसा॥
लाज खोय निकसी बनवारा। बन पांखी लैं करे बिचारा॥
जो पंखी मो दुख लै उड़ई। धर्मलाय पीतम का ढुंढई॥
चलीनिकस बिनबिरह बियोगन। धाई सखी संग हुइ जोगन॥
ले गोरी धन मँदिर सिधारी। रोवन लगी जहांलग नारी॥
रोवन लाग देख दुख माता। कौन रोम मोहिं दीन बिधाता॥

सोम पड़ाजग चहुँदिशा लोग सबै पछिताय।
को अस बैरी आय इत गयो सो आग लगाय॥

उठी आग नहिं जाय बुझाई। धरती लाग स्वर्ग का धाई॥

कठिन बिरह घन डारे गोरी। तन मन उठी लूक जिमि होरी॥
खोवे लग पुनि रूप सुरंगा। निशि दिन भस्म चढ़ावे अंगा॥
पिउ पिउ करे पपीहा नारी। कंत पिउ मिले हेर मनहारी॥
मात पिता मन भयो अँदेशा। हेरें न कत पावें वह देशा॥
यही जो सोच पड़ा सुल्ताना। बेग बुलाय धरायन पाना॥
कोऊ बेगि नहिं पान उठावे। पंथ अपार जान को पावे॥

थाके पायक पवनअस थके ज्ञान जो पाख।
पावैको तेहिखोजकर जेहि सुन लखा न आख॥

काहू बेग न खावा पाना। मो मन हार थका सुलताना॥
रोवन लागि मुक्ताहर नारी। जान चहत करते मम बारी॥
को यह योग करै मोहिं चेरी। आन जो देइ चाह वह केरी॥
जो वह देश जान मैं पाऊं। लेबारी संग तहां सिधाऊं॥
यही शोच ते जाय भुरानी। छुटगइ नींद भूख औ पानी॥
तब दुख देखि शब्द शिरनावा। तुम आपहि यह रोग बढ़ावा॥
दीनो मोर चीर जस खोई। तस अब देउ प्रानतुमरोई॥

अबहूँ पाऊं चीर मैं उड़जाऊं वह तीर।
दुखनिरवारौंकँवलकर लेमिलवौं यहि तीर॥

तब वह नारि चौंक हिय माहां। तुमको अहो जाउ केहि पाहां॥
यौंकहि बरन सहेली नारी। केहिबिधिजाहु सो प्रानअधारी॥
मैं सो तोर न जानो भाऊं। कहो सो भेद मैं टेकौं पाऊं॥
कहा शब्द मैं भेद बताऊं। प्रानजात का आप छिपाऊं॥
मैं तो परी परी की बारी। तो ये कँवल ते बाचाहारी॥
मात पिता छांड्यो यहि लागी। सो देखूं तन लावत आगी॥
अबहूं चीर मिले तो धाऊं। जेहि दिशि होय हेरिले आऊं॥

जबते छूटे चीर मम भयो पंख बिन पांउ।
दुख देखे रोऊं मैं कौन भांति मैं जांउ॥

तब मुक्ताहर कहा सयानी। मैं तोहि सत्य आज पहिचानी॥
तुम जस मोर जवाहिर बारी। तस तुम मोर न और दुलारी॥
कहो तो चीर देउँ मैं आनी। फिरहु बेगि लै शीतल पानी॥
बैठी तबहिं भवन के माहीं। खोज चीर दे पायस ताहीं॥
आन सुदीन्ह शब्द के हाथा। चरनन बहुरि छुवायो माथा॥
देखे जाय जो दृष्टि पसारी। कैस बाग राखो यह बारी॥
सखिन सबन मिलि टेका पाऊं। तुम्हरी आश प्रान सबकाऊं॥

पहिर सो चीर सुचित भई हुलसी बदनसम्हार।
आई पासहि कँवल के लेन सँदेशा बार॥

चेतु नारि अब कहो संदेशा। पाऊं चीर चलूं वह देशा॥
तोहि कारन वह देश सिधाऊं। जिउ न दियो जबलौं मैं आऊं॥
तब धन टेक परी लै पाऊं। का मैं कहूं तुम मोरे ठाऊं॥
प्रथमहि शीश चरन लै लायो। पुनि दुखमोर सो बरन सुनायो॥
कह्यो कि ऐसा करै न कोई। जिउ मारे हत्यादर होई॥
तबहिं निकसि आयो जिउ मारे। आप सो जोर लगायो प्यारे॥
चल त्यों शब्द संग मैं तोरे। पिय बिन पंख नाहिं बलमोरे॥

पाती लिखों कहांलग दुःख न लगत सहाय।
रोयकहो भावे जस जौन बरन कहि जाय॥

सुन संदेश भइ पंखी भेशा। चीर अंग मन बिरह सँदेशा॥
शब्द चली धन भइ मन धीरा। आस भई तन प्यास शरीरा॥
लै सन्देश चली जेहि ओरा। बिरहलोक धाई चहुँ ओरा॥
छूटत जाय बिरह की क्षारा। बनखंड जरैं हुये पतझारा॥

पंखी सहूं न बांचे कोई। जो बांचे तन श्याम सो होई॥
सूखे सरवर सरिता पानी। जेहिदिशिजाय सोपंखउड़ानी॥
यहि बिधि जाय रूम नियरानी। जरै सो नगर तहां बिन पानी॥

लीने लोग सँदेशरा फूंकत सब संसार।
गई सो रूमहिं नगर महँ बोवा चहतअँगार॥

तहां हंस जो बावर भेशा। उठ २ चलै चीन के देशा॥
चलै न देइ कोइ सँग भोगी। योगी बरन संग सब योगी॥
खन चौपार खनहिं फुलवारी। धरे न ज्ञान दिखावै सारी॥
नीच ऊंच सिगरो तहँ साथा। निशिदिन रहै सोमींजतहाथा॥
वह बावर नित क्षार चढ़ावै। चैन न होय जगत सुखपावै॥
आप बियोग जरै दुख जारा। चहुं दिशि ठाढ़ जरे संसारा॥
कोइ न करे धन शीतल गाता। देखे सुने होय नहिं ताता॥

ऐसा बिरहा बिकल सो बैठ सभा सब साथ।
तबलो पांख सँदेशले जाय बैठ तेहि हाथ॥

बैठी हाथ जबै वह पांखी। हुलसा हंस उघर गई आंखी॥
देखा प्रेम सँदेशी आवा। जानो प्रान कोउ घटलावा॥
चहुं दिशि लोग रहे निरताई। देखो पांख कहां ते आई॥
पूंछे लाग सो प्रेम सँदेशू। कहो शब्दभा का वह देशू॥
औ सब बात कहो जस गोरी। जेहिके हाथ गई मति मोरी॥
जेहिते अरझ गयो मम प्राना। है केहि भांति सो करो बखाना॥
मोहिं दुख दीन्ह रहै घरमाहां। नींद मांहि जानों कसताहां॥

मैं सो व्याह इत आयो ते का भई भोर बरात।
सपना हतो किसो मुख कबते बोल सदात॥

ऐ सुतशाह कहूं सतबाता। सत्य व्याह औ सत्य बराता॥

सपने दरश भयो पै तोरा। अचरज छाइगयो उठ भोरा॥
तुम तेहि तजि आयो परभाता। वह कर दुख सो जान बिधाता॥
भोर बरात सबै उठ साजी। मांगा कौन दंत तब बाजी॥
भयो न्याव रैनि जो बीना। मांगी जिन्हे दईका रीता॥
अंत फिरा हुइ लौट भिखारी। रही तोहि लाग सती वह नारी॥
धनलागी जब देन पराना। भयो बिचार मर्म गा जाना॥

अब रहिसके न तोहि बिन सत्यभई जसपात।
आग उठी तोहि सुमिरतहि कहिनजाय वहबात॥

पूरुष ज्ञान थके चहुं ओरा। जिन २ रूप लखा तब तोरा॥
बावर भई वे सखी सरीखे। जिन२ दुलह बरन तोहिं देखे॥
वह कर दुःख सो बरन न जाई। जो तो पास सेज पर आई॥
कँवल कली जैसी वह भोरी। तस तुम डारिदीन्ह झकझोरी॥
जस वह नारि हती सुकुमारी। तस तुम बिरहआग महँडारी॥
रक्तआंस रोवै दिन राती। धरे जो पांउ होइ भुइ ताती॥
चातक भई रटै पिउ पीऊ। कोक रैनि जिये हरजीऊ॥

तेहि दुख भिरगा श्यामभये बृक्ष भये बिनपात।
तुम अस निठुर बिदेशबसि भोर न पूंछो बात॥

सुन सँदेश जो बिरह बियोगी। उठा रोय जस बावरयोगी॥
सुन पंखी प्रिय प्रेम सँदेशी। कस मोहिं आग जरै का देशी॥
मैं तो वही दिवस कर जारा। जा दिन बिछुर परो संसारा॥
जस मैं भोग कीन्ह औ सोवा। तस कैलास छांड़ि मैं रोवा॥
कै बैरी अस कीन्ह बिछोहा। जिनजिउलीन्ह दागतनकोहा॥
अब मैं दोष धरूं केहि पाहीं। दोष सो मोहिं और कछु नाहीं॥
पंथ बताउ चलूं तेहि ओरा। कहां रहूं जहँ ठौर न मोरा॥

तोहि बिरहा की आग तेरहे ज्ञान दिनराति।
सो कह मारग मिलनका फेर मिलूं केहिभांति॥

पूछेसि काह मिलन का पंथा। देख सो आपन वेद गिरंथा॥
आउ गुरू जस पंथ बतावा। वही सो पंथ चला तै पावा॥
द्रव्य साज नहिं पावैं भोगी। पावैं सिद्ध साध तप योगी॥
पै वह पंथ असूझ अपारा। होय साथ तौ उतरै पारा॥
पै तोहि भूत्र रहा परदेसी। खोय भंडार सांउ गा लेसी॥
बेग चेत घर मूसै चोरा। तो सेधै उघरी निशि भोरा॥
अब जनि चेत सोउ उठि जागो। चलते सत्य प्रेम यह लागो॥

पल पल जन्म सिरातहै बिलँब करो केहिकाज।
जाय चोर घर मूसिकै भोर कहां यह राज॥

भयो चेत मन सोवत जागा। गुंग उठा बावर बैरागा॥
नैन खोल देखे हूं काहां। हत्यों कहां आयों अब काहां॥
नैन आंसु ढरकैं ज्यों मोती। हेरत जोत न देखी जोती॥
कहँ कैलास हत्यो जेहि ठाऊं। कहां सो प्रान जवाहिर नाऊं॥
कहां रही वह दरश लुकाई। कै सोवत महँ दीन्ह जगाई॥
हेरूं तन काया पुनि जारी। जहं अस मिले जोत उजियारी॥
तबलों नतो प्रान वह देऊं। जबलों हेर नाथ नहिं लेऊं॥

अहै न परगट निकट घट परै न तेहि पहिचान।
हेरूं योगी होय तेहि जगत किया जग छान॥

छांड़ देश भा योगी भेशू। बाढ़े केश बिरह उपदेशू॥
सुमिरन हाथ लीन्ह करमाला। कंथा पहिर लीन्ह मृगछाला॥
मुद्रा लीन मंत्र हिय पूरी। खप्पर हाथ मेल शिर धूरी॥
भयो भिखार बेष कर राता। मांगन भीख चला तज छाता॥

योग बेष कर संत सनेहा। देह कंवल ते लावा खेहा॥
गुप्त बियोग सो परगट जागा। सुमिरनध्याननित्य तेहिलागा॥
माया मोह लोभ तन छूटा। पड़ा सो प्रेम फंद सब टूटा॥

भयो सो तंत भिखार तब मेलि शीश पर छार।
तज सनेह सब जगतका झूंठ समझ संसार॥

भा बावर जो चला बियोगी। देख लोग भये बावर योगी॥
है केहि दीप जवाहिर बारी। जो पंखी यह कीन्ह भिखारी॥
अब का करो शोच मन कोई। चलो संग जो संगी होई॥
ठाकुर चला मेल गर कंथा। साजो बेग चलो तेहि पंथा॥
जस सुख भोग कीन्ह जग माई। तस अब चलो स्वर्ग उपराई॥
साँचो बेग न रहो अयाना। अहै सो दूर देश का जाना॥
कठिन पंथ पहुँचे तेहि सोई। जेहिकी गाँठ साँठ कछु होई॥

करो साज रे मूढ़ मन का भूल्यो सुख देह।
परदेशी तुम अंत सब कया केह की खेह॥

उठे मीत जे सेवक भोगी। गुरु उपदेश भये ते योगी॥
बलखे क्षार रूप महँ आई। रूप छांड़ि सो चीन सिधाई॥
छांड़ी फेर देश की चाहा। चले सो पंथ अगम औगाहा॥
हस्ति घोड़ औ द्रव्य भंडारा। छांड़ा सबै क्षार सरदारा॥
काढ़े श्वेत बरन उजियारी। पहिरे गर कंठा रतनारी॥
भे राते सब योगी बेशा। टूटा फंद झूंठ सब देशा॥
निहचो पंथ गुरू कर लीन्हा। भये भिखारि भर्म तज दीन्हा॥

भये मीत योगी सबै छांड़ि जगत की आस।
रोवन लागे लोग सब शोक भरे चहुँ पास॥

निकसी रोय हंस की माता। चरणन लाग देख रँग राता॥

चलो सो मोहि छांड़ि दुखपासा । माय निराश रहे केहि आसा ॥
तोहिंका मैं ले निकसूं भागी । सो कस छांड़ चलो बैरागी ॥
प्रथमहिं मार क्षार महि मेलो । तब भावै तहँवां तुम खेलो ॥
मोरे और टेक नहिं होनी । तोहिबिन होय बिदेशहिहोनी ॥
तोहि बिन माय चैन कत पाई । बृद्धबैस को पार लगाई ॥
तुम्हरी आश प्राण तन माहां । सोतुम छांड़िचल्यो मोहिकाहां ॥

हंस तो माय निराश के जिन बिदेश पर हेल ।
परथम छांड़ मिलाय के तब योगी हुइ खेल ॥

यहि कर शोच करो जिन माता । को केहिकर भा जन्म सँघाता ॥
बालक बंश न आपन जानो । भा योगी तेहिका पहिचानो ॥
मैं का करूं अहै नहिं बारा । नहिं महि कोउ लंपट परवारा ॥
जब आयो तब हतो अकेला । अबहुँ जाउँ तब देख अकेला ॥
जगमा को केहि कर पुनि सोई । जाय न संग रहें पुनि रोई ॥
सो मन बूझि के भयो नियारा । बैरी सबै लख्यों संसारा ॥
मीत न होय सो आपनि देहा । तौ केहि काज जगत करनेहा ॥

आयों आप अकेल जस चल्यों अकेला अंत ।
को केहि कर मानो जगत केहिका मोह कहंत ॥

चला छोड़ माता की माया । रोय रही कछु कीन्ह न दाया ॥
तब सुल्तान रोय चलिआया । टेका बांह ठाढ़ बिलमाया ॥
चलो कहा होइ भीख भिखारी । यह सुल्तान दई कत बारी ॥
दूजे पंथ सो कठिन अपारा । होय योगी पायो कत बारा ॥
चल दलसाज होय जेहि काजू । हूं संग चलूं साज सब साजू ॥
चलूं चीन हट ब्याहूं तोहीं । तब मन धीर होय मन मोहीं ॥
एको खांग अहै ना तोरे । काहेक आग दहत तन मोरे ॥

चढ़ो तुरी दल साजके करो बीर को बेश।
सर सुल्तानी छतर दै चलो चीन के देश॥

सुन सुल्तान रूम पति राजा। प्रेम के पंथ बैर नहिं छाजा॥
दर्ब गर्ब ते जो सुध होई। योग युगति कत साधत कोई॥
अगम पंथ का मैं पग देऊं। केहि गुन संग कटक मैं लेऊं॥
जहां पंथ अस कठिन अपारा। तहां सो कस निबहूं लै भारा॥
हुइ योगी लीन्हे जिउ हाथा। अहो अकेल लेउ केहि साथा॥
साथी मोर गुरू खंधारा। जो मोहिं खेय लगाई पारा॥
अब तुम यही काज मैं आहू। चलतबार मोहिं जिन बिलमाहू॥

अगम पंथ पग दीन्ह अब शीश हमूं तहँ दीन।
कटक कौन गुन साजहूं चहूं चहा तन कीन॥

बाबर बचन न एको माना। तब मन शोच पड़ा सुल्ताना॥
बेग सो अनवर मीर बुलावा। संग चलन का खड्ग बँधावा॥
मैं मुख ते यह बोल्यों बारा। अब यह चहूं उतारन हारा॥
तुम सँग कटक द्रव्य सब लेऊ। अब यह साथ जन्म भरिदेऊ॥
जाई चीन पती के पाहां। यहकर अर्थ कह्यो सब ताहां॥
जूझैं मरैं शोच जनि कीनो। जेहिबिधिमिलैताहिबिधिलीनो॥
फिरो पंथ जब काज सँवारी। तब पुरुषारथ करत तुम्हारी॥

आपन ठाउँ बिठाय तोहि प्राण देउँ तोहि हाथ।
जानो तब पुरुषार्थहू ब्याह फिरूं लै साथ॥

अनवर मीर पान तब लीना। औ पुनिसाज चलनका कीना॥
लीने पुरुष महाबरियारा। लाख बीच महँ बीर जुझारा॥
द्रव्य लीन्ह जो घरे न दीन्हे। हस्ती घोर महाजन कीने॥
ले सब साज हंस पहँ आवा। मोहिं सुल्तान संग तो लावा॥

अब तुम होउ तुरी असवारा। सेवक काज जो चहो सँवारा॥
दिन औ घरी सो फल लैलीनो। तो परदेश पंथ पगदीनो॥
जो लैचलो ज्ञान मत राजू। तो सिध होयँ अंत सब काजू॥
सेवक आदि जन्मकर चलो सो संग निदान।
तबलों छांड्यो संग नहिं जबलों घट में प्रान॥
सुन बावर सब मन्त्र सयाने। प्रेमकी बात कहा तेहि जाने॥
जेहि तन प्रेम कहां तेहि ज्ञाना। घरी न लिये दिये जब प्राना॥
जेहिका आश जियन की होई। सो फल घरी पल पूंछे सोई॥
मैं सो चलो प्रान के साथा। तुम ज्ञानी जिन लागोसाथा॥
मैं बावर तुम चतुर सयाने। केहिमतिदीन्हजोहोउअयाने॥
तुमका ज्ञान बेद सब सूझा। हूं अकेल एकमन बूझा॥
साथी मोर सो वही अकेला। लिये निबाह फंद जिन मेला॥
मैं बावर बैराग सँग तुम ज्ञानी जग राज।
जहां पंथ ना लखत हैं तहँ तुम्हारका काज॥
निकसा नगर छांड़िके हंसा। छूटा भर्म भीर औ संसा॥
चला सो छांड़ शीश पर मेली। रोय रही सब सखी सहेली॥
ठाउँहि ठाउँ रहा सब रोई। अंतचला पुनि संग न कोई॥
छांड़ि नगर जब पंथ सिधावा। सखिनभराजलकलशदिखावा॥
दही लिये ग्वालिन जो माथे। मालिन फूलघाल गरकांथे॥
मृग जो दाहिन बांये देखा। बोले लुवर सगुन सब लेखा॥
धोबिन जाय जो आगू दीन्हे। क्षेमकली मुख माछर लीन्हे॥
देख नाग खञ्जन भँवर पण्डित कीन्ह विचार।
जो देखे अस सगुन मग सिद्ध करै करतार॥
चला जो मारग लाग भिखारी। पाछे चला साज दल भारी॥

वैं काहू का संग न लीये। पै कोउ संग छांड़ि नहिं दीये॥
आगे जाय चले वह जोगी। पाछे साज चले दल भोगी॥
काहू केर न मारग देखा। भोगी आंधर जोग सरेखा॥
जौन पंथ वह सिद्ध बनावै। पता चलै दल कटक सिधावै॥
गुरु सो दुष्ट अंध सब चेला। जेहिदिशि चलेचहे जेहिकेला॥
चले उतरपूरब दिशि लेखे। दुइ मारग आगे तहँ देखे॥

ठाढ़ भये पंथी तहां कहा कि नेक बताउ।
कौन सो मारग चीन कह चले देइ दै पाउ॥

कहा शबद तुम दाहिन लेऊ। बायें पन्थ पाउँ जिन देऊ॥
वह मारग पै चले न कोई। जोरे चला सो गा जिउ खोई॥
सात सुमेर पड़े मग मांहा। आगे मिलै समंद औगाहा॥
दाहिन पंथ चीन मैं गाढ़ा। जो भा पार जान तहँ ठाढ़ा॥
परबत मांह मिले बटपारा। मांझ समंद मगर घड़ियारा॥
आगे मेरु समंद जो आवै। तहां चलत पंथी दुख पावै॥
मैं मारग देखो वह सारा। प्रथमै कठिन अंत उजियारा॥

चलो सहूं तहँ मार्ग के भर्म न मानो अंत।
और नहीं दूसर कतहुं मरन जियन यह तंत॥

चला सहूं तेहि मारग जोगी। औ दल चला जहांलौं भोगी॥
जेहि दिशि चले रूमकी धारा। परबत टूट हुये सब छारा॥
जोगी चले जाय बन माहां। लखे न धूप ताप औ छाहां॥
बीते चले पंथ नौ मासा। पहुंच समूह सुमेरु के पासा॥
दीरघ महा समूह सुमेरा। जानन जाय सो ताकर फेरा॥
देख उंचाई थाकी दीठी। जानो गगन धरा वह पीठी॥
घांटी एकन दूसर पंथा। कही ऐस भावै जो कंथा॥

कहा शबद अब देख सब यही समूह पहार ।
चढ़ों संभर घांटी यही अँतलूटैं बटपार ॥
भइ पुकार सब कांप पहारा । सजा कटक बटपार गंवारा ॥
भोजल राय तहां बड़ राजा । सुनि के कटक वीर रन साजा ॥
मता बोल मंत्रिन से कीना । आवा कटक चहै गढ़ लीना ॥
छेंको पंथ चढ़े नहिं साजू । नहिं तो हाथ रहे नहिं राजू ॥
तब दल साज जो छेंकी घांटी । अस गह लीन न पैठे चांटी ॥
घांटी छेंक बसीठ पठावा । चला सो उतर हंस पहँ आवा ॥
पूंछा कौतुग चहिहौ कहा । जैयो कहां पंथ औगाहा ॥
यह तो सुमेर समूह है वांकी स्वर्ग की बाट ।
चढ़ा चहौ जो कटक लेजाई फूट लिलाट ॥
हंस कहा मैं अहौं भिखारी । आयों बाटजो शरण तुम्हारी ॥
तुमपंथी कहँ धर्म करै हौ । छांड्यो पंथ भीख ज्यों देहौ ॥
अहै सो मोहिं चीनका जाना । तुमका देख भर्म अब माना ॥
कहो सो जाय जहां तो राऊ । पंथी काह करे अन्याऊ ॥
कहा बसीठ को पंथी आही । पंथी केर को पंथ गेराही ॥
तुम बटपार भेष बहु कीना । छल के चहौ मेरु गढ़ लीना ॥
यह तौ अहै समूह पहारा । बहुतन आय यहां शिरमरा ॥
कैकुबाद औ जुलकरन चढ़ न सके दल जोर ।
तहूं विचारे हो कहा चढ़ा चहूं तेहि खोर ॥
सुन बसीठ वे चाहै राजू । मैं जोगी मारग ते काजू ॥
तुम चातुर परखो मन माहीं । यहिमां मोर कपट कछु नाहीं ॥
धर्म निहोर जाहु सो राजा । जोगी घेरो केहि दुख काजा ॥
सो फल होइ जो जोगी मारे । लियो प्रान यह पोर दुवारे ॥

सुन सो बसीठ भई मन धीसा। लौट गये तब राय के तीरा॥
शीश नवाब सो अर्थ सुनावा। जोगी एक रूम ते आवा॥
औ सब कटक रूम की आहैं। चीन के देश जानको काहैं॥
मन अधीन विनती करे अहे सो मीत भिखार।
कहो जाय पथ दीजिये पाप होय जिय मार॥
राजन कहा बहुत हम देखा। फिर बटपार किये यह बेखा॥
जो होते वे तंत भिखारी। कस ले चलत कटक अतिभारी॥
जोगी की परगट है बानी। देखें ताह तबै पहिचानी॥
काम क्रोध तृष्णा नहिं माया। लोभ न दृष्ट परे उन काया॥
जारें देह रक्त औ मांसू। नैनन भरे रहें नित आंसू॥
परगट पीर गुप्त मन राता। छुट वह जाय न दूसर बाता॥
सोई नाम न एक वह आहे। भर्म संग को जोगी काहे॥
जबलो संग भर्म है तबलो नाहिं भिखार।
जो आवै वह तपिस होय तो का गात हमार॥
फिर बसीठ जोगी पहँ आवा। पंथ चलन का अर्थ बताआ॥
कहा तोर किन मारग रोका। तोरे कटक काल भये तोका॥
जो तुम चहो पंथ भा पारा। सो सब तजो जहां लो भारा॥
साध होउ जो होउ अकेला। का तेहि भार प्रेम जो खेला॥
सुन यह बचन हंस तब रोवा। साथी मोर मोह ले खोवा॥
उठा रोय अनवर पहँ आवा। तुम मो प्रान सो आन गँवावा॥
मैं जोगी वह भोगी राजा। मैं तोहि सङ्ग कहाँ ते छाजा॥
हंसो भिखारी ताहि कर जाहिं न पूंछो वार।
तुम खोवा मोहिं बी चहीं लाग संग बटपार॥
अनवर मीर रोय सर नावा। मैं तोहिं काज कटक लै आवा॥

सो तोहिं जाय न पावैसि पारा। मैं फिर जाउँ सो केहि के बारा॥
जाई कटक जहां जेहि जाना। मैं तो संग देउँ चल माना॥
कहि यह वचन सुवरन फारा। भा जोगी गर कंथा डारा॥
द्रव्य घोड़ सब दीन लुटाई। आज्ञा कीन्ह लियो सब जाई॥
जहँलौं संग हते सरदारा। तिनहु बोझ कंथा गर डारा॥
फिरा सो लोग जहां जेहि भावा। संग न लाग कटक जो आवा॥

पांच लाख पुरखान महँ पांच सहस भये संग।
लोभी फिरे सो प्राण ले बिरही भये पतंग॥

रोय फिरीं जबहीं असवारी। भरम होय तब चला भिखारी॥
भये एक मत जोगी भेसा। चढ़े सुमेरु छांड़ यह देसा॥
बावर हंस प्रेमकर लागू। चढ़ा सुमेर चला होय आगू॥
दूतन कहा जाय जहँ राजा। आवत तपा चढ़ाये साजा॥
तब दूतन फिर मारग छेंका। धौं छल है कै तन मन एका॥
राजा कहा देख निज लेहू। जोगी होय तो आवन देहू॥
देखा गुप्त ध्यान मह रंगा। प्रकट दीप सो वीर पतंगा॥

टेका तबहीं चरन पुनि और दण्डवत कीन्ह।
देखा सबहीं प्रेम तन छांड़ पंथ तब दीन्ह॥

चढ़ा भिखार मेरु पर आवा। राजहि धाय चरन शिरनावा॥
हूं तौ बनो गुसाईं तोरा। दुःखनिरास पाप लख मोरा॥
तुम गुरुसिद्ध जो कीन्ह गुसाईं। मोहिं तारन आयो इहिठाईं॥
अब आयो तो माया कीजे। दिन दस अशन दासके लीजे॥
अस्थल करो तो तारो ठाऊं। मैं सेवक ढूंढ़ों जेहि पाऊं॥
हंस कहा तुम सब कुछ कीन्हा। जो अब पंथ भिखारी दीन्हा॥
पंथी कहा करैं अस्थाना। जिनका दूर देशहै जाना॥

दूर देश जाना हमें जियन जन्म केहि नाथ।
कहा करूं अस्थान अब देशं पंथ के हाथ॥
रैनि बसेर तहां पुनि लीन्हा। राजें दास कोट विधि कीन्हा॥
वह कै ध्यान रैनि सब जागा। भोर भये उठि मारग लागा॥
आयो द्रव्यभेंट ले राजा। लियो करो यह पंथ के काजा॥
द्रव्य देखि पुनि छुवे न कोई। जोगिन कहा काल हमहोई॥
जबलग रही संग हममाया। तबलग तुमहु न कीन्हीदाया॥
सो वैरी जिन संग लगावो। धर्मयही जो पंथ बतावो॥
पावै निर्मल पंथ भिखारी। यह किरपा औ दास तुम्हारी॥
पंथी अंध विदेशमहँ पूँछि सो मारग लीन्ह।
जो वह पंथ बतावै कोटिदान जिउ दीन्ह॥
राजा कहा रे पंथ बताऊँ। मैं यह पंथ दीन्ह नहिं पाऊं॥
सरवन सुना न देखों ठाऊं। काजानूं जो पंथ बताऊं॥
वहनै कह्यो जो पंथ बतायो। पुनआगे कस दीन्हों पायो॥
सुनि जोगी तब दीन्ह अशीशा। अगुवा मोर आप जगदीशा॥
चला शब्द माथे हुइ आगे। चेलाजबै सबै पछलागे॥
कठिन पंथ गिरिवर उपराहीं। भूखे प्यासे चले सबजाहीं॥
नेरे गये जोन गढ़जाहां। पंथ अपार स्वर्ग अस ताहां॥
ऊंच पंथ सीढ़ी बिना जानो स्वर्गकी बाट।
चले न पंथ बटोही कोउ जाय कौन तेहि बाट॥
गये पिता जेहि गढ़के ठाऊं। पंथ न मिलै देहिंकहँ पाऊँ॥
लांबागुरू बसै तेहि पाटा। चेलै पंथ चलावैं बाटा॥
तेहि जोगी लखि शंका मेला। तिहचढ़ि चले गुरू औ चेला॥
चला हंस दै सीढ़ी पाऊं। आवा बैठ गुरू जेहिठाऊं॥

बैठा नाथ जो आसनमारे। बांधेमांम औ आप बिसारे॥
चेला बहुत ठाढ़ करजोरी। लाये इष्ट सहों चहुंओरी॥
बरस छ सात बीततहँ गयऊ। जान्यो बालक बृद्ध न भयऊ॥

तेहि बनजाय बियोगि सब निहुरि नवायो माथ।
जोगीकर आदेश सुन शीश उठायो नाथ॥

देखानया बिदेशी आवा। आदर कीन्ह निकट बैठावा॥
पूंछा कौन देशते आयो। केहि कारण यह मेरु सिधायो॥
अहो सो कौन गुरूके चेले। कौनदेश कहँ चाहो खेले॥
केहि सुमिरनकर लीन्हों माला। केहिकारण ओढ़्यो मृगछाला॥
केहिकारण सुख भोग बिसार्यो। केहिकारण कायादुखजार्यो॥
केहिगुनशीश बढ़ायो केशा। जोगीभयो सो केहिउपदेशा॥
कहो बिथा जो बिरह बियोगू। यहिदिशि चलै न पंथी लोगू॥

कहँ तुम आयो मेरुपर कौनदेश दिशलाय।
आगे मारग कठिन अति पंथी कोउ न जाय॥

कहूं काह गुरु बिरह अपारा। कहा न जाय बिरह दुखमारा॥
मोहिं बिधि जन्म धनी घर दीन्हा। पै मोहिं दुखी जन्मकर कीन्हा॥
दुखी लाय बिधनै मोहिं पाला। पुनि गरफन्द दुखी मम घाला॥
चीनके देश जवाहिर नारी। हूं तेहि कारन भीख भिखारी॥
तेहि सुमिरन कर लीनो माला। कंथा मेल लियों गर छाला॥
सो मम गुरू मैं ताकर चेला। जिनगर फन्द प्रेम कर मेला॥
प्रान सो मोर अहै वहि देशा। तन बावर सर बाढ़्यो केशा॥

शीश निछावर घालके दीन्ह्यो तेहि पथ पाय।
अब मोहिं शोच न आवकछु मन भावै सो खाय॥

सुन जोगी तोयँ अम दुखदाहा। तेहिते चीन गये का लाहा॥

जोभा तोयँ निज तंत भिखारी। सुमिरिताहिजिनसृष्टि सँभारी॥
छांड़ सो अजहुं जवाहिर नेहा। का वह प्रीति होइ जेहि खेहा॥
वृद्ध भये जो रहे न रंगा। मरत भये बिछुरे सब संगा॥
यह रँग रूप फूल फुलवारी। रहे न हाथ सो होय उजारी॥
जोगी अभी न काहू देखा। देखो सो वह बावर लेखा॥
जेहि विधि सेउ बसंत जो खोवा। तसतोयँ खोय चहन पुनि रोवा॥

भेष जो प्रेम भिखार कर सुमिर एक करतार।
जोन मरे बिछुरै नहीं वृद्ध होय नहिं बार॥

सुनो गुरू तुमका शिष देहू। मोहिं वहसे अस लाग सनेहू॥
देखो निरख परख मोहि काया। मैं कत अहो अहो वह छाया॥
दूसर और कहां करतारा। जो जिउमार जिलावनहारा॥
मैं करतार वही महँ देखा। दूसर और भर्म कर लेखा॥
वही सो पूर जगत के माहां। पड़े सो सृष्टि लखो मैं ताहां॥
वही सो वृक्ष पात फर फूला। वही सो प्रान जगत कर मूला॥
वही सो बसे चीनके माहा। वही सो थाह वही औगाहा॥

निकट बसे दुख दै गई चाह न मो बुत लेय।
बैरी प्यासा रकत कर दरश नीरकत देय॥

सुन बौरी अस कहस भिखारी। सुनज्ञानीकोउ निजमनमारी॥
सत जेहिका मन जेहि ते राता। तेहिके निकट सो वही बिधाता॥
पैका होय फिरे संसारा। जो घटगा ना करे बिचारा॥
हिये मांझ दरपन के लेखो। घटही दरश जवाहिर देखो॥
मैं संसार सबै फिर आवा। अन्त गुरू घटमाहिं लखावा॥
घटही सात दीप नौ खंडा। घटही सात स्वर्ग ब्रह्मण्डा॥
घटही समद सीप औ मोती। घटही निरख परे वह जोती॥

घटकर खोज न कीन्हतैं खोजन चलै जो चीन ।
यहाँन कीन्ह चिन्हार कछु उहां परे कत चीन ॥

सुनो गुरू मैं हिये जो चीन्हा । तौ यह पंथ पयाना कीन्हा ॥
मैं वह दरश परम जब कीन्हो । तौ जग छाँड़िके मारग लीन्हो ॥
खींचे गये लीन मम नाथा । तेहिने फिरे न फेरे माथा ॥
मारेस खींच हिये महँ बाना । बचे न अजहूं चहे जो प्राना ॥
हूं देखा तेहि पंथ सिधारा । मरूं व पंथ कि पहुंचों पारा ॥
वह के पंथ कोउ कत पाई । हूं तर जाउँ प्रान जो पाई ॥
हूं मैं मुई जिये वह केरा । उतरे पार कि बूड़े बेरा ॥

मरूं तौ वह के मारगे जिऊं तौ वह के पार ।
जब लग दरश न पावहूं हूं पतंग गत छार ॥

सुन जोगी अब आसन मारो । भोर होय वह पंथ सिधारो ॥
तोयँ बस मात प्रेम मधु पीये । मरन जियन का डर नहिं हीये ॥
हम तोहिंका यह कारन काहा । आगे पंथ अगम औगाहा ॥
पड़े देउ गढ़ कठिन पहाड़ा । बसे तहां राकस बटपारा ॥
मानुष मार सो भोजन करहीं । बचे न पंथी जायजो पड़हीं ॥
तुमजो जाय परे वह ठाऊं । कौन बचेका पंथ बताऊं ॥
मैं कहिदीन अर्थ सब तोहीं । तोरेसत्त बनाहै तोहीं ॥

पुरुष ढीठसो कोटि महँ एकपार को होय ।
नहीं तो बहुत बटोहि तहँ जाय तहींजिय खोय ॥

सत्य कहातुम गुरू गोसाई । वहका मोहिं भरोसकछु नाहीं ॥
बसा सो रहै नींद नहिं लीन्हा । भोरभये उठि मारग चीन्हा ॥
निभरमचला भरम सब खोई । चलादेउगढ़ सम्मुख सोई ॥
वनअंधियार पड़ा तेहि माहां । देखेहार हड़ावर ताहां ॥

पैठत बन जानो बरखाई। चहुंदिशा रहा भरम सब छाई॥
योगिन कीन्ह मता तेहि ठाऊं। वेग सो चलो उठावो पाऊं॥
चापे चले पात नहिं डोले। कोउ काहू से बात न बोले॥
हुई भेंट नहिं देवते बसे अहै बन बीच।
नहीं तो पंथ भूला यही तबै आनु पुनिमीच॥
चले जो सहूं पंथ बनमांझा। एकअंधियार भईपुनि सांझा॥
कांपेजीउ होय नहिं मेंटा। होय चहै सो जाय न मेंटा॥
तेहि बनमांझ जो सागर तीरा। राकस ठाढ़ा श्याम शरीरा॥
शीश केश भौंयें पुनि आये। निकसदंत पुनि बाहर आये॥
सांस लेत निकसे ज्यों झोंका। मुखखोले तो अधिको लूका॥
ऐस बरन वह राकस कारा। मानो काजर केर पहारा॥
देख भूल गये योगिन प्राना। एक हंस लखभर्म न माना॥
कहा हंस गुरु सुमिरहिय जो जगतारन हार।
सो नेरे है आपने कहा करै बटपार॥
तबलो वह राकस लखि देखा। भै अनन्द मनमार बिसेखा॥
घरमहँ भोगदई मोहिं दीन्हा। अब इन चहौं भोगमैं कीन्हा॥
नेरे आय सहूं भा ठाढ़ा। जानो निरख प्रान वह काढ़ा॥
पूछा जाय सो कहां भुलाने। मैं लैचलौं पंथ जो जाने॥
शब्द कहा यह बात न मानो। संग न चलो मीत जनि जानो॥
लैकै कतहुं लोह महँ डारी। एक एक सबही का मारी॥
योगिन कहा सुनो रे हंसा। है राकस बैरी जस कंसा॥
रोंके यहि मारग अहै मार सो मारग लेउ।
नहीं तो सीधे भये अब सहूं जूझ जिव देउ॥
हंस कहा यह मार न जाई। मारै न अस लोह बरिआई॥

यह कर मन्त्र एक है सांचा। सुमिरो ताहि चहेजिउ बांचा॥
सत्यते नाउँ जवाहिर लीयो। सुखते चलो पंथ पग दीयो॥
अहै सो आस पास चहुं ओरा। काकेसके सो राकस मोरा॥
कहअस बचन चलापग दीना। राकस तबहिं चहा जिउलीना॥
तबलोभा प्रसन्न करतारा। कीनदया यह जाय न मारा॥
स्वर्ग दूत सबही उठि धाये। भरपाखान मेघभर लाये॥

तड़कै लागे तरप अति बरसे लाग पखान।
दूतभये समहूं जबै राकस लूट परान॥

राकस भागन संग जबलागा। चलापंथ निभरम बैरागा॥
जेहि तनप्रेम भरम तेहि नाहीं। आप सहाय कीन्ह जगमाहीं॥
कठिन साज योगिन के पाहां। जो कर्तार बसे हिय माहां॥
परगट भेष चढ़ाई क्षारा। गुप्तभंडार जो कटकजुभारा॥
तेहिगुनचले जायँ बनमाझा। मांझ बिदेश पंथ औगाहा॥
पहुँचे आय श्याम गढ़पासा। जहुआद्वार पवन परगासा॥
सहस कोस सम्मुख तेहि केरे। पड़ै न नीर बृक्ष कहुँ हेरे॥

शब्द कहा सबही सुनो निकस चलो यहिठांव।
नहीं तो पवन भकोर है मारग टिके न पांव॥

चला गुरू बन मारग लीना। पवन द्वार बायें तज दीना॥
गुरू सो निकस पेल भा पारा। सो भा पार जो संग सिधारा॥
बहुत रहे पाछे बिलमाई। तबलो धार पवन की आई॥
जस गुरु मारग छांड़ भुलाने। तस मारग तज अंत उड़ाने॥
पड़े सो मांझ पवन के माहां। उड़े सो पात पवन गत ताहां॥
कोइ तो चटक चले भय पांखी। कोइ तो उठे न देखे आंखी॥
कोइ भुइँ टेक रहा गहि पंथा। कोइ कर गात बातभा कंथा॥

कोइ उड़ान स्वर्गका गिरतभये भुइँ क्षार।
कोई करटूटे चरन कोइ कर टूट लिलार॥
हंस तहां पुनि कीन्ह बसेरा। तहां सबै साथिन का हेरा॥
कोइ तट मिला कोई शठ दूरी। कोइनहिं मिला मिला जो धूरी॥
कोइ घायल गहि बांह उठावा। कै सेवा पुनि संग लगावा॥
भये यक ठांउ बचे जो कोई। फिर मारग लागे उठि सोई॥
आये जबै भूप गढ़ पाहां। सिलता धरन भये पुनि ताहां॥
छिन २ लहर समँद की आवै। वृक्ष पखान सो खोद बहावै॥
छिन महँ जाय सो नीर भुराई। छिन महँ जाय भेरपर आई॥
लूक उठे जल भीतरे तपै तेल असपान।
दस महँ एकै जाय कोइ न तो होय जिवहान॥
पाहन ठांउ ठांउ तहँ परे। ताते जान अग्नि महँ धरे॥
चला हंस तेहि पर पगधरा। पाहन जरे पै पाउँ न जरा॥
जो है पुरुष प्रेम कर लागू। गने न बह्नि बार कछु आगू॥
हंस चला तेहि पंथ बियोगी। पाछे निकसि चले सब योगी॥
सलिता धरणि भई वह बारा। चढ़े जाय पुनि हेर पहारा॥
तेहि मा पंथ कठिन शठ कीन्हा। खांड़े धार देव आधीना॥
दो दश खोह अगम अवगाहा। बीच पंथ तहँ नाहिं निबाहा॥
शब्द कहा यह मारगै चलत कँरै संसार।
हलके केर निबाहियै गरू परै नाहिं पार॥
तौले पंथ चला गुरु आगू। पाछे सबै भये पछलागू॥
जेहि के हता जैस ब्यवसाऊ। सो तस चढ़ा चला दै पाऊ॥
कोइ जस उड़ै पवन के झोंका। कोइजस अँधरभरतपगचोंका॥
कोई बिज्जु लौंक दिखरावा। कोइ पंखी भुइँ चरन नलावा॥